चन्दामामा
जून १९९३
RS
4

Go ahead
Try-Me!
I remember the day we moved into our new home. The boys and girls on the block looked like they were having `hazaar' fun. But no, they didn't look too interested in me.
How do you walk up to a new gang and make them your pals? Think...Think. So I just chuck a Try-Me in my mouth...walk my best tough-guy-walk and offer them a handful of Try-Me - "Go ahead, Try Me!" Yeah. I made five new best pals that day.
Parry's
Try-Me!
HTA-8507
Parry's
Try-Me!
The Bold New Taste

चन्दामामा

जून १९९३

★

अगले पृष्ठों पर

★

एक प्रति : ४ रुपये

वार्षिक चन्दा : ४८ रुपये

मनोज कॉमिक्स का

फ्री लक्की बम्पर ड्रा

रुपये

निम्न 24 कॉमिक्स पढ़िये और जीतिए

3,00,000.00

तीन लाख रुपये के आकर्षक इनाम

- प्रथम (एक) पुरस्कार मारुति कार 800 सी.सी. स्टैण्डर्ड
- द्वितीय (एक) पुरस्कार हीरो होण्डा
- तृतीय (एक) पुरस्कार कलर टी.वी. 20"
- चतुर्थ (एक) पुरस्कार दिल्ली से नेपाल की यात्रा के दो रिटर्न एयर टिकट
- पंचम (पचास) पुरस्कार स्पोर्ट्स साइकिल

जादूगर कोबरा	देवता का प्याला	विनाशदूत करकेंटा	अजगर दी ग्रेट	आंख से टपका खून	आकाश का जादूगर	शैतान का टोप	इच्छाधा राम
फिर आया ड्रक्युला	यम की तलवार	ड्राक्युला का प्रेतजाल	कुबड़ा शैतान	मुर्दा नं. 402	कंकाला जादूगरनी	हम शैतान हैं	कब्रिस्त की घ
त्रिकालदेव और गजालू का चक्रव्यूह	त्रिकालदेव और काली खोपड़ी	त्रिकालदेव और पिशाचराज	चार सिर शैतान के	खूनी दानव की वापसी	ड्राक्युला आया मौत लाया	हवलदार बहादुर और नौ अजूबे	हवलदार ब और साठ ला का बक

आवश्यक नोट

उपरोक्त चौबीस कॉमिक्स की बैक पर "फ्री लक्की ड्रा कूपन" छपा है। जब आप चौबीस कॉमिक्स पढ़ लें तो चौबीस कूपन एक साथ इकट्ठे करके भेजें। उन चौबीस कूपनों को एक साथ ड्रा में शामिल करके ड्रा निकाला जाएगा। कृपया अलग-अलग कूपन न भेजें।

इनाम कैसे प्राप्त करें

1. उपरोक्त चौबीस कॉमिक्स के टाइटल की बैक पर लक्की ड्रा कूपन छापा गया है। इन चौबीस कॉमिक्स के कूपन काटकर व उनकी बैक पर साफ-साफ शब्दों में अपना नाम व पूरा पता लिखकर भेजें।
2. आपके चौबीस लक्की ड्रा कूपन हम तक 30 जुलाई 1993 तक अवश्य पहुंच जाने चाहिए।
3. ड्रा 15 अगस्त 1993 को निकाला जाएगा।
4. 30 जुलाई के बाद प्राप्त होने वाले कूपनों को ड्रा में शामिल नहीं किया जाएगा।
5. चौबीस कूपन एक साथ भेजने वालों को ही इस लक्की ड्रा में शामिल किया जाएगा।
6. लक्की ड्रा के विजेताओं को उनके पुरस्कार 30 सितम्बर 1993 तक भेज दिये जायेंगे।
7. लक्की ड्रा के कूपन "मनोज पॉकेट बुक्स" 5 17 बी,रूपनगर, दिल्ली 110007 के पते पर भेजें।
8. अपने लक्की ड्रा कूपन साधारण डाक द्वारा ही भेजें।
9. मनोज पॉकेट बुक्स के कर्मचारी अथवा उनके परिवार के सदस्यों को छोड़कर, सभी भारतीय निवासी इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं।
10. प्रथम चार विजेताओं के नाम व फोटो अक्टूबर माह में प्रकाशित राम-रहीम के नये कॉमिक्स 'शेष नाग का खजाना' में प्रकाशित किये जायेंगे और पाँचवें पुरस्कार के पचास विजेताओं के नाम भी इसी कॉमिक्स में छापे जायेंगे।
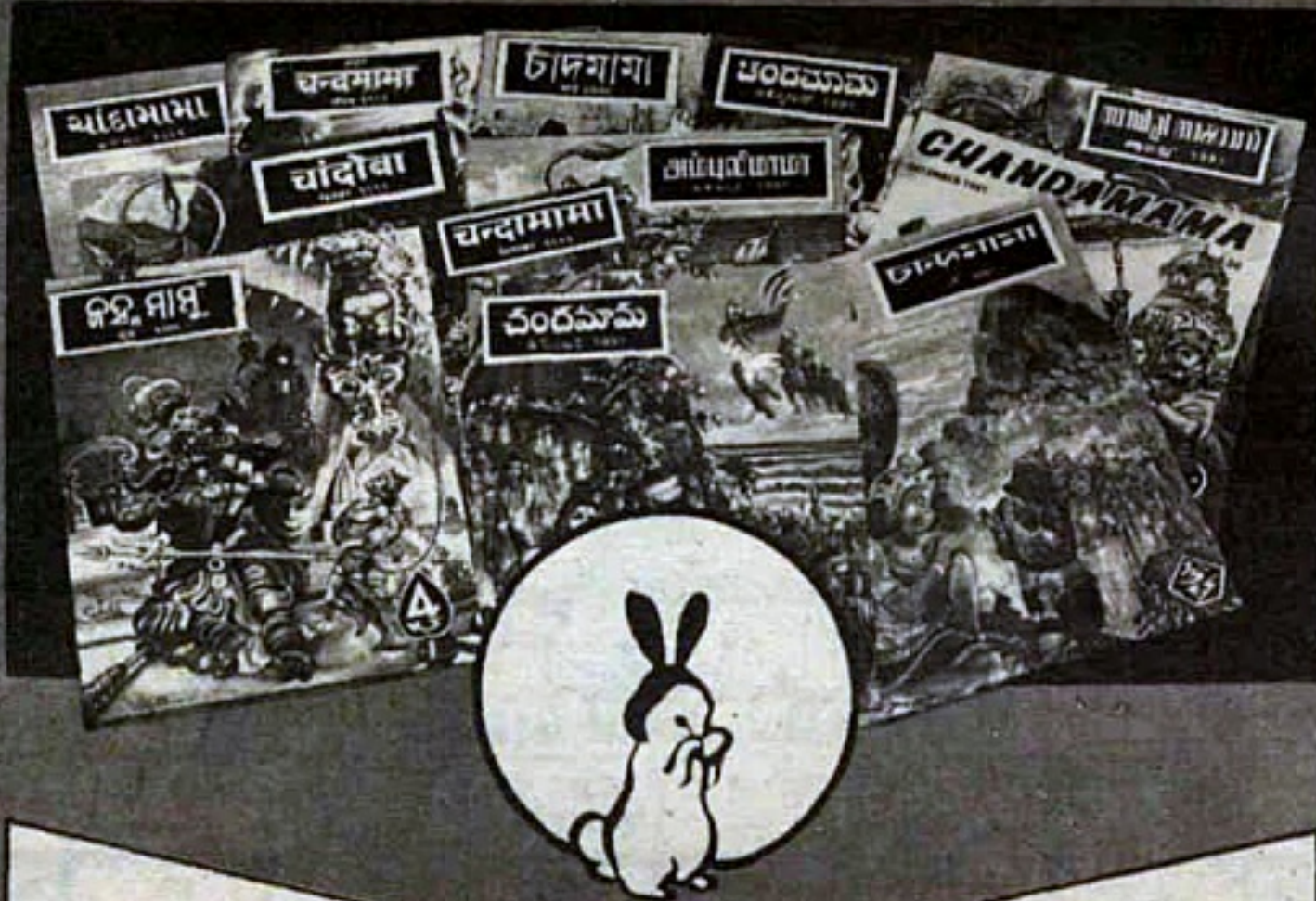
चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'

संचालक : नागिरेड्डी

जब माँ-बाप भी दोस्त हैं ।

कहावत है "काम ही काम करो और खेल-कूद बाद, तो जाक नीरस लडका बन जाता है" पिछले कुछ महीनों में यह कहावत आंशिक रूप से तथ्य भी हो सकती है, क्योंकि यह वार्षिक परीक्षओं का समय है । इस समय माँ-बाप चाहते हैं अपने बच्चे पढाई में पूरा ध्यान दें और उसमें मग्न हों, क्योंकि खेल-कूद से भी पढाई पर्याप्त महत्वपूर्ण है । अगर अपने बच्चों को खेल-कूद के लिए थोडी देर भी बाहर जाने से उन्होने मना किया तो यह कोई ग़लती तो नहीं है ना? उन्हे इसके लिए माफ़ भी किया जा सकता है ना?

अब यह बात तो कल की हो गयी है । अब तो बच्चों के सिर से परीक्षाओं का भूत उतर गया है । उनकी छुट्टियों के दिनों का आरंभ हो गया हे । अब वे अपने दोस्तों के साथ खेल-कूद में मशगूल हैं या अपने सिश्तेदारों से मिलने किसी दूसरे नगर, शहर, गाँव में गये हुए हैं । वे अपना वक्त सामान्य ज्ञान की पढाई में गुज़ारते होंगे अथवा अधिक समय खेल-कूद में बिताते होंगे ।

खेल-कूद बचपन का प्रधान अंग है । जहाँ छोटे बच्चे अधिकतर अपने खिलौनों से खेलते रहते हैं वहाँ बडे बच्चे घर या बाहर के खेल-कूद यें लगे रहते हैं । ये खेल-कूद नये-नये दोस्त बनाने का अवकाश प्रदान करता है । यही नहीं, इनसे उनकी पुरानी दोस्ती और गाढी भी होती है । इन दिनों में जब कि अधिकतर बच्चे ऊँची-ऊँची इमारतों में स्थित विभाजित अपने छोटे-छोटे घरो में रहते हैं, तो इस तंग सीमा के अंदर उनके माँ-बाप के अलावा उनका सच्चा दोस्त और कौन हो सकता है? कितने माँ-बाँपो ने इस वास्तविकता पर सोचा-विचारा होगा? हर दिन माँ-बाप अपने बच्चों के साथ एक घंटा ही सही, खेल-कूदमें शामिल हों तो वे अपने बच्चों के और निकट आते है । इससे माँ बाप को उन्हें मानषिक मूल्यों के बारे में बताने का सुवसर मिल जाता है । वे अपने बच्चों में मस्तिष्क व हृदय की विशिष्टताओं को भर सकते हैं । इस समय उनके बच्चे निर्भय होते है । उन्हें डर छूता ही नहीं क्योंकि खेल-कूदमें कोई किसी का दुश्मन नहीं, सब के सब दोस्त ही दोस्त हैं ।

माँ-बाप और बच्चों के चिंतन के लिए यह उत्तम सामग्री है ।

वर्ष : ४५ | जून १९९३ | अंक : १०

एक प्रति : रु. ४/- | वार्षिक चन्दा : रु. ४८/-

ग्रीष्मावकाश में विशेषांकों का उपहार*

राजस्थान पत्रिका प्रकाशन

पाक्षिक

बालहंस

*मई (द्वितीय)

कथा-कहानी विशेषांक

रोचक, मजेदार, शिक्षाप्रद तथा मन को छूलेने वाली कहानियों का खजाना

*जून (प्रथम)

वन्य विशेषांक

अनोखे व विचित्र जीव-जन्तु, पेड़-पौधे, पहाड़ वनों की उपज के बारे में जानकारी व मनोरंजक कहानियां

*जून (द्वितीय)

चित्रकथा विशेषांक

आपके प्रिय पात्र ठोलाराम, बिज्जू, ढपोर शंख, कूंकूं के साथ अनेक चित्र कथाएं व उन पर जानकारियां

*जुलाई (प्रथम)

शिक्षा विशेषांक

शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर व शिक्षा संबंधी समस्याओं का महत्व बताने में मददगार अनूठा विशेषांक

अपनी प्रतियां आज ही सुरक्षित करायें.

छठवी बार अध्यक्ष-पद

यह कोई साधारण विषय नहीं है कि कोई राजनैतिक नेता लगातर छे बार किसी एक देश का अध्यक्ष बना रहे । इन्डोनेशिया के अध्यक्ष जनरल महार्तो को यह गौरव प्राप्त हुआ है । इन्डोनेशिया की राजधानी जकार्ता में पिछले मार्च महीने में दस दिनों तक पीपुल्स कन्सल्टेटिव असेंब्ली की बैठकें हुई थीं । इसके कुल सदस्य एक हज़ार हैं । इस बैठक में ७२ साल के जनरल महार्तो सर्वसम्मति से अध्यक्ष निर्वाचित हुए ।

१६ वीं शताब्दी में इंडोनेशिया करीवन १३,००० द्वीपों का समूह है । पोर्तगीज़ के व्यापारी यहाँ आकर जम गये, जिससे संसार के इतिहास में इसे प्रमख स्यान प्राप्त हुआ । वहाँ काफी मात्रा में उपलब्ध सुगंधद्रव्यों से वे आकर्षित हुए । परंतु अंग्रेज़ व्यापारियों ने उन्हें वहाँ से भागा दिया । उसके बाद लगभग दो सौ साल वह द्वीप-समूह डच इंस्ट इंडिया कंपनी के अधीन रहा । १७६८ में वह नेदरलांड का शासित प्रदेश बन गया । द्वितीय विश्व-युद्ध के दौरान (१९३९-४५) जापान ने उसपर आक्रमण करके उसे अपने अधीन कर लिया । १९४२ में जापान ने अपने नेतृत्व में वहाँ राष्ट्रीय शासन की स्थापना की । लेकिन १९४५ में जापान जब मित्रपक्षों के सम्मुख झुक गया तो सुकर्णो के नेतृत्व में देशसमर्थकोंने आज़ादी की घोषणा की । १९४९ में वह डच से मुक्त हुआ और स्वतंत्र देश बन गया । १९६३ में नेदरलान्ड्स ने भी पश्चिम न्यूगिया को छोड दिया । १९६६ में सुकर्णो के विरुद्ध कम्यूनिस्टों ने विद्रोह कर दीशा । उस विद्रोह को जनरल रडेन महार्तो ने दबा दिया और आपात स्थिति की घोषणा कर दी । महार्तो १९६७ में सुकर्णो की जगह पर आये । उसके बाद १९६८, १९७३, १९७८, १९८३ में वह उस पद के लिए निर्वाचित हुए । अब छठवीं बार वे अध्यक्ष चुने गये ।

कोरी बातों से नहीं बल्कि ठोस काम करके अपने सामर्थ्य को साबित करनेवाले नेता हैं प्रेसिडेंट महार्तो । पच्चीस सालों से उन्होने जिन-जिन योजनाओं को कार्यरूप दिया, उन्हीं से नित्संदेह इंडोनेशिया की आर्थिक क्षेत्र में काफी प्रगति हुई ।

प्रधानतया पंचवर्षीय प्रणालियों ने अन्य देशों की दृष्टि को भी इस देश की ओर आकर्षित

किया । इन प्रणालियों के द्वारा हर साल छह प्रतिशत की आर्थिक प्रगति करके इन्डोनेशिया संसार के उन प्रगतिशीत वर्धमान देशों में से एक हुआ, जिनकी प्रगति तीव्र गति से हुई ।

एक समय था, जब कि इंडोनेशिया दूसरों देशों से बडी मात्रा में चावल का निर्यात करता था । १९८४ में वह स्वयंपोषक बना । बीस सालों में शिशु-मृत्युओं की संख्या एक हज़ार औसतन् १४० से ६० तक घट गयी । अब सब बच्चे स्कूल जाते हैं । १९७१ में निरक्षरता ३९ प्रतिशत थी, जो अब १६ प्रतिशत है । जनसंख्या की वृद्धि २.३ प्रतिशत से १.६ प्रतिशत तक रोक दी गयी । ये ही कारण हैं, जिनकी वजह से महार्तो इंडोनेशिया के प्रगतिशील नेता माने जाते हैं । आनेवाले पच्चीस सालों में प्राप्त किये जानेवाले लक्ष्यों की अभी से उन्होने पक्की योजनाएँ बनायी हैं ।

प्रेसिडेंट महार्तो क्या ये पाँच साल शासन-भार संभाल सकेंगे या वे किसी उन्तराधिकारी की खोज में हैं, यही इंडोनेशिया की जनता के बीच मुख्य चर्चा बनी हुई है ।

इंडोनेशिया संबंधी कुछ और विशेषताएँ ।

- १३,५०० द्वीपों का समूह इंडोनेशिया ५,५१० किलो मीटर तक व्याप्त है । ये द्वीप कुछ हिन्दूमहासागर में हैं तो कुछ पसिफिक महासागर में ।
- इंडोनेशिया संसार में सोलहवाँ बडा देश है (१,९१९,४५० व. कि.मी.) आवादी में इसका पाँचवाँ स्थान है । (१६,९०,००००)
- सेना-बल में यह ग्यारहवाँ शक्तिशाली देश है । केनडा के बाद इसका स्थान हैं ।
- तीव्र गति से प्रगति-पथ पर बढ़ते हुए देशों में इसका स्थान पाँचवाँ है ।
- चावल की फसल के पैदावार में संसार में इसका तीसरा स्थान आता है ।
- यहाँ की राजभाषा अंग्रेजी लिपि में लिखी जानेवाली 'वहासा इंडोनेशिया' है । इसके अलावा करीब दो सौ प्रांतीय भाषाएँ बोलनेवाले लोग यहाँ मौजूद हैं ।
- चालू करेन्सी है 'रुपिया'

ग्रहण छूटा

जवान शौरी सर्वेश्वरपुर के ज़मीदार के काम पर निकला । जैसे उसने सोचा, वैसे ही अंधेरा होने के पहले ही वह घने जंगल को पार कर पाया, जो रास्ते में पडता था । किन्तु, इतने में आकाश में बादल छा गये और धीमी-धीमी बारिश होने लगी ।

वह सोच ही रहा था कि अब इस रात में और सफ़र करना ठीक नहीं होगा और कहीं छिप जाना अच्छा होगा । अचानक कडकती हुई बिजली की कांति में उसने कुछ घर देखे । शौरी तेज़ी से उस तरफ बढ़ा और एक पुराने खपरैल के घर के दरवाजे खटखटाये ।

फौरन ही एक बूढ़ेने हाथ में एक छोटी लालटन लिये दरवाजा खोला । एक पैर से वह लंगडा था । शौरी को देखते ही उसने पूछा "अंदर आओ, भीग तो नहीं गये ।"

सिर हिलाते हुए 'नही' का इशारा करके वह अंदर चला । बूढ़े ने पलंग पर बैठने का इशारा करते हुए पूछा "इस अंधेरे में, इस बारिश में कहाँ जा रहे हो?"

थोडी-सी विमुखता से ही "मैं सर्वेश्वरपुर के ज़मींदार के दरबार का प्रहरी हूँ । ज़मींदार के छोटे बेटे के लिए उनके मामा के घर से एक बिल्ली के बच्चे को ले आने निकला हूँ । वह कोई नयी नस्ल की है । उनका छोटा बच्चा जिद कर रहा है कि उस बिल्ली के बच्चे के बिना मैं खाना नहीं खाऊँगा । राजा अपने बेटे को बहुत चाहते हैं । बेटा जो भी माँगता है, उसे वे दिलवा देते हैं । उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए मैं निकला हूँ" कहा ।

यह सुनते ही बूढ़ा हँस पडा और कहा "तुम्हारी उम्र पच्चीस की भी नहीं होगी, छह फुट के जवान हो, तुम्हें तो चाहिये कि ढ़ाल और तलवार लेकर राज्य की और राजा

की रक्षा करने के लिए आगे बढो! हर नागरिक का अपने देश और अपने राजा के प्रति कर्तव्य होता है। जब राजा और देश विपत्ति में हो तो उनकी रक्षा करना उसका धर्म होता है। अपना कर्तव्य और धर्म भुलाकर तुम तो जमींदार के लिए बिल्ली के बच्चे को लाने के काम में लगे हुए हो?"

एक तरफ बूढ़ा हँसते हुए ये कटु बचन बोले जा रहा था, तो दूसरी तरफ शौरी खिसियाने लगा। लेकिन बूढेने प्यार से उसके कंधों को थपथपाते हुए "ठीक है,पर क्या तुम जानते हो कि एक महीने के पहले इस राज्य में क्या भयंकर घटना घटी" पूछा।

"जानता हूँ। राजा समुंदर की सैर करने गये तो नाव डूब गयी और राजा मर गये। इससे बडी भयंकर घटना और क्या हो सकती है?" दुखी शौरी ने कहा।

बूढ़ा एक-दो क्षण सिर हिलाते हुए चुप रहा और फिर बोला "अच्छा, तो तुम इससे ज्यादा नहीं जानते। तो सुनो। अलकनंदा राजा की इकलौती बेटी है। उसका होनेवाला पति इस राज्य का राजा होगा। राजकुमारी ने घोषणा की है कि उससे पूछे जानेवाले तीन अलग-अलग सवालों के जवाब जो देगा, उसीसे वह शादी करेगी। परंतु हाँ, ये जवाब उसे सही लगने होंगे। जिसके जवाब उसे सही नहीं लगेंगे, वे मासूम आदमी बडी कठोरता से मगर के मुँह का भोजन बनाये जा रहे हैं"

"ये सारी बातें आप कैसे जानते हैं" ताज्जुब से शौरी ने पूछा।

"राजा का अंगरक्षक बनकर मैने पंद्रह साल काम किया है। एक रथ की दुर्घटना का शिकार होकर राजा की रक्षा करते-करते एक पैर खो चुका हूँ। यह मेरी अपनी जगह है। इस जगह से मेरा अपना खास नाता और लगाव है। इसलिए यहीं अपने आखिरी दिन गुज़ार रहा हूँ। फिर भी मेरे कुछ अपने आदमी हैं, जिनसे सदा राजा के अंत:पुर की बातें जानता रहता हूँ। तुम इस बिल्ली के बच्चे की बात ताक मे रखो और राजधानी जाओ। राजकुमारी के इन बुरे कामों को रोकने का साहस करो"।

"अगर राजकुमारी को, इन अत्याचारों को

करने से रोका नहीं गया तो मालूम नहीं कितने नादान लोग मौत के घाट उतारे जायेंगे । अगर साहस करके तुमने राजकुमारी के अत्याचारों को रोका तो तुम्हारा जीवन सार्थक होगा । क्या तुम ऐसा उत्तम कार्य करके अपना मानव-धर्म नहीं निभाओगे?"

शौरी थोडी देर के लिए सिर झुकाये रहा और कहा "ठीक है, आप आशीर्वाद देंगे तो मैं राजधानी अवश्य जाऊँगा" ।

"शाबाश, अब तुम मुझे अच्छे लगे" कहते हुए बूढेने अपनी उँगलियाँ उसके बालों में बडे प्यार से फेरीं ।

दूसरे दिन शौरी राजधानी की ओर चला । वह अंतःपुर पहुँचा और बताया कि राजकुमारी के प्रश्नों का जवाब देने वह तैयार है ।

राजकुमारी की दासी ने कहा "जानते हो, सही जवाब ना देने पर दंड क्या होगा?

"मौत । मगर का आहार" निडर शौरी ने कहा । दो दासियों ने उसकी आँखों में पट्टी बाँधी और उसे एक कमरे में छोडकर कहा "अब पट्टी खोल दो"

शौरी ने ऐसा ही किया । सामने सिंहासन पर बैठी अलकनंदा उसे दिखायी पडी । वह कमाल की सुँदरी थी, पर उसका चेहरा चिंता और दुख से भरा लग रहा था । शौरी को लग रहा था कि वह किसी विवशता से विवश हो ऐसा करने पर बाध्य हो रही है ।

"आकाश से विशाल कौन है? सुमुंदर से गहरा कौन है? मक्खन से कोमल क्या है? इस तीनों सवालों का एक ही जवाब देना होगा" अलकनंदा ने अनिच्छापूर्वक कहा ।

ताज्जुब से उसे देखते हुए शौरी ने कहा "स्त्री का हृदय । फिर भी राजकुमारी, आप क्यों ऐसे सवाल पुछ रही हैं? लोकज्ञान-रहित भावुकों ने कभी किसी जमाने में अपने आप ये सवाल किये और जवाब भी तैयार किये । वे इस प्रकार के व्यर्थ और खोखले प्रश्नों के उत्तर ढूँढने में अपना जीवन व्यतीत करते थे । आप राजकुमारी होकर इस प्रकार शून्य जीवन क्यों व्यतीत करती हैं । आप सचमुच किसी की परीक्षा लेना चाहती हों तो अर्थभरित कठिन सवाल कीजिये ।"

अलकनंदा ने बडी चिंता से "अगर मै स्वतंत्र होती तो ये सवाल तुझसे नहीं करती ।

उसने बताया कि खुद और राजा किस भयंकर विपत्ति में फँसे हुए हैं ।

एक महीने के पहले अलकनंदा अपने पिता के साथ नौका-विहार पर गयी हुई थी । उस समय सेनापति वीरवर्मा भी उनके साथ था । समुद्र के बीच जाने के बाद ही उन्हें मालूम हुआ कि उसकी कितनी बुरी नीयत थी? नाव चलानेवाले सब उसी के आदमी थे । वे उस नाव को एक छोटे द्वीप के पास ले गये । वीरवर्मा एक लाल पथ्थर की गुफ़ा में राजा को बंदी बनाकर अलकनंदा को अंतःपुर ले आया । बाद उसने एक झूठी कहानी बनाकर नगर में मुनादी पिटवा दी कि समुँदर में नाव डूब गयी और राजा लापता हैं, सिर्फ राजकुमारी को बचाकर लेआया हूँ । अब प्रश्नों की एक साजिश भरी प्रणाली बनाकर, सबको मगर-मच्छों का आहार बना रहा है और आखिर यह कहकर राजकुमारी से विवाह रचने जा रहा है कि मैं ही प्रश्नों का सही जवाब दे पाया हूँ । लोग भी उसकी इन बातों का विश्वास करेंगे । वे बेचारे यही समझेंगे कि अकेले वीरवर्मा ने ही सही जवाब दिये हैं, इसलिए राजकुमारी से विवाह रचाने का वही हक़दार है ।

इतना सब कुछ बताने के बाद अलकनंदा ने कहा "नींद नहीं आयी तो कल रात मैं बगीचे में गयी । वहाँ सेनापति और उसके विश्वासपात्र नौकर नागेंद्र के बीच जो बातचीत हो रही थी, झाडी के पीछे छिपकर सुनती रही ।"

एक दुष्ट मुझसे ये सवाल करवा रहा है और जो भी जवाब देता है, उन्हें मगर के मुँह में ठोंस रहा है । तुम्हें नहीं मालूम कि मैं अंदर ही अंदर इस कार्य पर कितना घुल रही हूँ । लेकिन क्या करूँ? मेरी विवशता का पूरा लाभ उठा रहा है वह दुष्ट" कहा ।

शोरी ने फ़ौरन अपना दायाँ हाथ उठाकर मुट्ठी कसते हुए "वह कितना ही बलवाल हो, इसी क्षण उसे मौत के मुँह में फेंक दूँगा" कहा ।

"तुम क़ाबिल और अक्लमंद लगते हो । उस दुष्ट को मारने में अब काफ़ी विलंब भी हो गया है । अब तो सिर्फ एक ही दिन बाक़ी रह गया है ।" कहते हुए राजकुमारी ने उसे अपनी पूरी स्थिति का विवरण दिया।

सेनापति नागेंद्र से "कल सवेरे ही लाल पथ्थर के पहाड़ के पास जाओ । वहाँ पहुँचने के बाद वहाँ के रखवालों से बोलो 'ग्रहण छट्रा' तो वे उसे सुनकर राजा को छोड देगे और उन्हें तुम्हारे साथ भेजेंगे, जब नाव बीच समुंदर में हो तब राजा को समुंदर में फेंक दो । परसों का दिन बडा शुभ दिन है । उसी दिन राजकुमारी से मेरी शादी होगी । बाद जब मैं राजा बनूँगा, तुम्हारी ईमानदारी के लिए तुम्हें सेनापति या मंत्री बनाऊँगा" कह रहा था ।

फिर राजकुमारी ने कहा "तभी मुझे मालूम हुआ कि वीरवर्मा कितनी गहरी चाल चल रहा है । राजा को वह अवश्य मरवा डालेगा और साथ ही मुझसे शादी भी करेगा । तुम्हीं बताओ कि मैं उसके चंगुल से कैसे निकल पाऊँगी?"

शौरी आग बबूला होकर बोला "मैने कभी सुना तक नहीं कि ऐसे राजद्रोही भी हो सकते हैं ।"

"वीरवर्मा नर के रूप में राक्षस है । अंधेरा होते-होते तुम्हें मगर के मुँह में डालने वह यहाँ आयेगा । मैं उससे बोल दूँगी कि जब मैने तुमसे कहा कि तुम्हारा जवाब सही नहीं, तो तुम खिड़की से भाग गये ।" अलकनंदा ने बताया ।

फौरन शौरी खिड़की से कूदा और पेडों की झुरमुट में छिपता हुआ बगीचे में पहुँचा और वहाँ से समुद्र के किनारे ।

इसरे दिन शौरी तडके ही एक मछेरे को

कुछ रुपये देकर उस द्वीप में पहुँचा, जहाँ राजा बंदी था ।

शौरी ने जैसे ही द्वीप में कदम रखा तो एक ऊँची पगडीधारी ने मूँछ पर ताव देते हुए, तलवार लिये आगे बढ़कर उसे रोक लिया और गुर्राया" तुम कौन हो? समुंदरी डाकुओं में से हो क्या?"

शौरी बडी निडरता से बिना किसी घबराहट के बडे सुर में चिल्लाकर बोला "ग्रहण छूटा" ।

यह सुनकर पगडीवाला एक क्षण के लिए हक्का-बक्का रह गया "क्या? यह संकेत तो मुझे और नागेंद्र के अलावा कोई जानता ही नही"।

शौरी और ऊँचे सुर में बोला "यहाँ आते-आते मेरा ढ़ाल और तलवार समुंदर में फिसल

गये । नहीं तो, इसी पल तेरा सर धड से अलग कर देता । वह सिर्फ नागेंद्र नही, नागेंद्र सिंह हैं। होनेवाले राजा नागेंद्र सिंह को तुम्हारे इस बुरे व्यवहार की ख़बर लग गयी तो तुम्हारे टुकडे-टुकडे कर देंगे ।"

पगडीवाले के चेहरे का रंग फीका पड गया "क्या, फिर से बताना, खुलकर बताना", बोला ।

"तो सुनो, श्रीनागेंद्रसिंह ने कल रात को सेनापति वीरवर्मा के भोजन में द्वादश विष-लेप मिला दिया है । वह बारह घंटों के बाद अपना कमाल दिखायेगा । यों वीरवर्मा जैसे ही परलोक सिधारेगा, श्री नागेंद्रसिंह यहाँ पधारकर राजा को छुडाकर" यों शौरी बताये ही जा रहा था पगडीवाला ज़ोर से उल्टी करके ज़मीन पर धडाम से गिर गया ।

तुरंत शौरी ने उसकी तलवार ले ली, नाव में पडी रस्सियों से उसे जकडकर बांध दिया और दूर खडे पहरेदारों को तलवार की धार दिखाते हुए कहा "राजा को तुरंत यहा ले आओ ।"

पहरेदारों ने राजा को मुक्त किया और उसके पास ले आये ।

वापस लौटता हुआ राजा होश में आया और वीरवर्मा को दिखाता हुआ, जो विषप्रयोग के भय से काँप रहा था, शौरी से पुछा "तुम कैसे जान पाये कि यही राजद्रोही वीर वर्मा है?"

शौरी ने कहा "महाराज, जैसे ही मैं अंतःपुर से भाग निकला तो मैंने अनुमान लगाया कि यह ज़रूर इस द्वीप में आयेगा क्योंकि वह सोचता होगा कि ज़रूर मुझे बहुत राज़ मालूम हो चुके होंगे । अलावा इसके, जब मैंने संकेत-शब्द बताया, तो तुरंत इसने कह दिया कि मेरे और नागेंद्र के अलावा यह संकेत तो किसी और को मालूम ही नहीं । इससे मुझे यह पक्का हो गया कि यही राजद्रोही वीर वर्मा हैं तो मैंने विष-प्रयोग की गढंत कहानी सुना दी । इसपर विषप्रयोग तो नहीं हुआ, लेकिन इस भय से वह बेहोश हो गया कि उसपर विषप्रयोग हुआ है ।"

राजाने शौरी की बडी प्रशंसा की और दूसरे दिन भरी राजसभा में सबको सुनाते हुए कहा "इस शौरी के साहस के कारण ही इस राज्य का ग्रहण छूटा । यही राजकुमारी का पति और होनेवाला राजा है" ।

सभासदों ने अपनी सहमति हर्ष-ध्वनियों के साथ दी ।
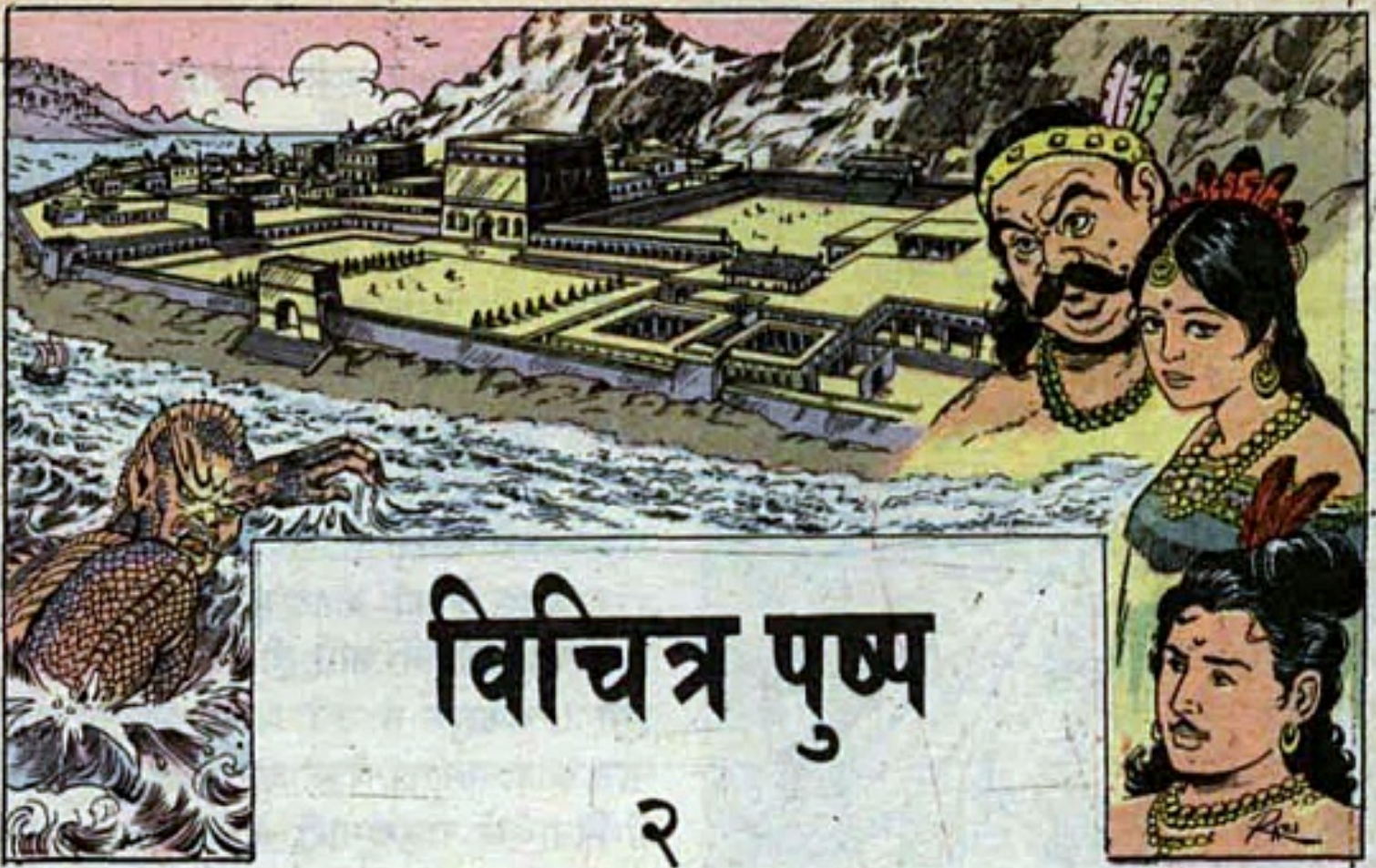
विचित्र पुष्प

२

माणिक्यपुरी में जो वसंतोत्सव संपन्न हुए, उसमें उत्तुंग नामक पहाड़ी जाति के एक युवक ने भाग लिया। वहाँ उसने राजकुमारी प्रियंवदा को एक गुलदस्ता दिया। राजकुमारी की इच्छा के मुताबिक राजा प्रतापवर्मा ने अपने सैनिकों को हुक्म दिया कि वे उन फूलों के पौधे ले आयें। लेकिन वे केवल फूलों के साथ लौट आये। राजगुरु गौरीनाथ ने कहा कि ये पुष्प अशुभसूचक हैं। (बाद)

"इतने सुंदर और सुगंधित फूल अशुभ-सूचक कैसे हो सकते हैं? उनका खिलना कैसे अशुभ माना जा सकता है? जिन फूलों से भगवान की पूजा की जाती हैं, प्रकृति की शोभा बढ़ती है, वे फूल भला क्यों वर्जित हैं? मेरी समझ में आ नहीं रहा है गुरुदेव?" यों प्रश्न किया राजा प्रतापवर्मा ने।

"मैं यह बाद समझाऊँगा। सुना है कि दो सैनिक वे फूल ले आये हैं। आखिर सैनिक क्यों फूल खिलनेवाले उस दक्षिणी की दिशा के सरहदों पर गये? कहीं वहाँ झगड़े तो नहीं हुए ना?" राजगुरू ने पूछा।

"नहीं गुरुदेव। आपके आशीर्वाद-बल

से देश की सारी प्रजा सुखी व शांत है" कहते हुए राजा ने 'शताब्दिका' के बारे में सैनिकों की बतायी सारी बातें सुनायीं। सब सुनकर राजगुरू ने पूछा "वे फूल अब कहाँ हैं?"

"राजकुमारी के महल में हैं। उसे इन फूलों से इतना लगाव हो गया है कि उन्हें बगीचे में नहीं, अपने महल में ही सजाया है। इतने दिनों के बाद भी मुरझाये बिना वे अपनी सुगंधि व्याप्त कर रहे हैं।" राजा ने कहा।

"उन्हें वहाँ से तुरंत हटा दीजिये। मेरी तरफ़ से राजकुमारी को बताइये कि उनको राजभवन में रखने से राजपरिवार को भारी नुक़सान पहुँचेगा"। राजगुरू ने कहा।

"गुरुदेव, आपकी आज्ञा मेरे लिए शिरोधार्य है।" एक क्षण मौन रहकर राजा ने कहा "आप कृपया बतायें तो मैं सुनना चाहता हूँ ये फूल क्यों अशुभसूचक हैं। राजकुमारी प्रियंवदा उन फूलों को अपने प्राण-समान मानती है। इसलिए मैं समझता हूँ कि उन फूलों के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त करना उसके लिए श्रेयस्कर होगा। राजकुमारी को बुलवाऊँ?"

राजगुरू ने 'हाँ' कहते हुए सर हिलाया।

राजकुमारी ने आते ही राजगुरू के पैर छुये। राजगुरु ने उसे आशीर्वाद देते हुए पास के आसन पर बैठने का संकेत किया।

पिता को राजकुमारी ने यों देखा, मानों वह जानना चाहती है कि उसे यहाँ बुलाने की वजह क्या है?

"शताब्दिका" नामक इन विचित्र कुसुमों के बारे में बताने के लिए राजगुरू पधारे हुए हैं। उनके बारें में जानना तुम्हारे लिए ज़रूरी है, इसलिए मैंने तुम्हें बुलवाया है" बेटी से राजा ने कहा।

"एक समय था जब कि ये विचित्र फूल आपनी सुगंधि दशों दिशाओं में व्याप्त करते थे और साल में एक बार विकसित होते थे। एक बार खिलें तो बस अनेकों दिन मुरझाते ही नहीं थे। कुछ शताब्दियों के पहले आपके वंश के राजा चंद्रकांत माणिक्यपुरी का राज्य-भार संभालते थे। वे दयावान व साहसी थे। उनकी बडी ख्याति थी। उनका चंद्रकेतु नामक एक छोटा भाई था। वह

हर तरह से भाई के स्वभाव के खिलाफ था । राज्य-भार संभालने में वह अपने भाई की मदद नहीं करता था । उल्टे उनका नुक़सान पहुँचाने की उसने ठानी । उसने तरह-तरह की कोशिशें की, जिनसे उस के भाई बदनाम हों, राजगद्दी से उतर जाएँ और स्वयं उसपर आसीन हो । जब ये सारी कोशिशें निष्फल रहीं तो वह राज्य छोडकर चला गया । वह देशभर निरर्थक घूमता-फिरता रहा और आखिर देश के दक्षिणी सरहदों के पहाडी क्षेत्र में पहुंचा । वहाँ उसने पहाडी जाति के निवासियों से परिचय बढ़ाया । उन पहाड़ियों में नालांबि नामक एक पहाड़ी था, जिसे मंत्र-तंत्र मालूम थे । उससे दोस्ती बढ़ाकर चंद्रकेतु ने कुछ तंत्र सीख लिये । एक दिन उसने देखा कि उस पहाड़ी ने कुछ विचित्र फूल तोड़े और उन्हें गरमागरम पानी में डाला । वह पहाड़ी उस पानी को हर रोज़ और गरम करता था । फिर उसने उनसे एक प्रकार का सुगंधित तेल निकाला । उस पहाड़ी ने चंदकेतु को बताया कि वह तेल जिसपर छिड़का जायेगा, वह उनके वश हो जायेगा और वे वही करेंगें जैसा वह चाहेगा । यह रहस्य जानने पर चंद्रकेतु की ख़ुशी का ठिकाना ना रहा । उसने निर्णय कर लिया कि ये फूल वह राजा पर प्रयोग करेगा और राज्य को हस्तगत कर लेगा । इसलिए वह उन फूलों को लेकर माणिक्यपुरी पहुँचा । एक पोशीदी जगह पर उन फूलों को ख़ूब गरम

किया और कुछ दिनों में उसने उनसे विचित्र तेल निकाला । वह चाहता था कि पहले किसी पर इस तेल का प्रयोग करूँ और जान लूँगा कि उसका बरताव कैसे होगा? जब परिणाम अनुकूल होगा तो वह राजा पर इस तेल का प्रयोग करेगा और माणिक्यपुरी के सिंहासन पर आसीन होगा, यही उस पाषी चंद्रकेतु की योजना थी ।"

राजकुमारी ने जब पूछा "कहीं उसकी योजना सफल तो नही हुई ना" तो राजगुरु थोड़ी देर रुककर बोले "नही राजकुमारी, उसकी कुटिल योजना सफल नहीं हुई । मै वही बताने जा रहा था । सुनो"

"कुलश्रेष्ठ नामक एक पंडित उन दिनों में लैरंबीमाता के मंदिर का प्रधान पुजारी

था । उसकी एक सुँदर बेटी भी । नाम था भाग्यश्री । वह इतनी सुँदर थी कि चाँद भी उसकी सुँदरता को देखकर शर्म के मारे बादलों के पीछे छिप जाता था । उसको देखते ही चंद्रकेतु उसकी सुंदरता पर रीझ गया । उसे मालूम नही था कि वह मंदिर के पुजारी की बेटी है । वह यह पुष्प-तेल उसपर प्रयोग करके उसे अपनी ओर आकर्षित करने की उम्मीद करने लगा । एक दिन भाग्यश्री अपनी सहेलियों के साथ पास की एक नदी में नहाकर मंदिर आ रही थी । झाडियों में छिपकर उसने उसपर तेल छिड़क दिया । दूसरे ही क्षण भाग्यश्री ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाती हुई इधर उधर भागने लगी । सहेलियाँ जान नही पायी कि भाग्यश्री पर अचानक क्या बीता है, तो उन्होने इसे पकड़ने की कोशिश की । कुछ सहेलियाँ यह बात पुजारी को बताने मंदिर की ओर भागीं । एक बरतन व कुछ पत्ते लिये हुए भागते हुए चंद्रकेतु को देखकर उसे पकड़ने के लिए कुछ सहेलियाँ चिल्लाने लगीं तो रास्ते में गुज़रते हुए कुछ लोगों ने उसे पकड़ लिया और उसे मंदिर ले चले ।

कुलश्रेष्ठ उस समय देवी के अलंकार में निमग्न था, क्योंकि पूजा का समय निकट आ रहा था । उसने जब स्त्रीयों का आर्तनाद सुना तो बाहर आया और देखा तो चकित और स्तब्ध रह गया । वह अपनी बेटी के पास पहुँचा और उसके कंधों को झुलाते हुए पूछा, "भाग्यश्री, क्या हुआ?" भाग्यश्री कुछ बोल नहीं पा रही थी । उसकी स्थिति बडी ही विचित्र थी । वह कुछ भी कह नहीं पाती थी । उसका मुँह खुल नही पा रहा था । उसे अपने इंद्रियों पर काबू ही ना रहा । वह थोड़ी देर तक इधर-उधर देखती हुई बेहोश गिर पड़ी । उसकी सहेलियाँ "नदी से लौटती हुई भाग्यश्री पर उस आदमी ने कुछ छिड़का है । उस क्षण से यह पगली सी बरताव कर रही है" कहती हुई लोगों के बीच में छिपे चंद्रकेतु को दिखाया ।

पुजारी उसकी तरफ़ बढ़ते हुए बोला "बोलो, तुम कौन हो? मेरी बेटी से ऐसा क्यों व्यवहार किया" ।

"महात्मा, मुझे मालूम नहीं था कि यह

आपकी बेटी है । अनजाने में मुझसे यह अपराध हुआ है । पहाड़ी आदमी के कहे मुताबिक मैंने कुछ विचित्र फूलों को इकट्ठा किया है और उनसे तेल बनाया । उस तेल के प्रभाव को जानने के लिए मैंने इस युवती पर यह तेल डाला है । मुझे सचमुच मालूम नहीं था कि यह युवती आप की बेटी है । अलावा इसके, मैं और कोई पाप नहीं जानता" चंद्रकेतु अपनी सफ़ाई में और कुछ बताने जा रहा था ।.

पुजारी उसकी बातों को अनसुनी करके जल्दी-जल्दी मंदिर में गया । देवी मूर्ति के गले के पुष्पहार को लेकर वह बाहर आया "माता लैरंबी, तुम ही मेरे आधार हो, लोक कल्याण के लिये मैं सदा से तुम्हारी पूजा करता आ रहा हूँ । आज तक मैंने अपने लिए तुमसे कुछ नही माँगा ।"

"तुम स्वयं देख लो कि मेरी इकलौती पुत्री पर क्या बीत रही है । उसकी रक्षा का भार तुम्हीं पर है । मेरी बेटी को इस दुस्थिति पर पहुँचानेवाले इस नरराक्षस का नाश हो । यह पुष्प पुनः कभी विकसित ना हो, जिसके कारण तुम्हारे भक्त की पुत्री पर ऐसी घोर विपत्ति आ पड़ी है ।" क्रोध से काँपते हुए पुजारी ने शाप देते हुए देवी के पुष्पहार को चंद्रकेतु पर फेंक दिया ।

दूसरे ही क्षण पुजारी के सापने एक विचित्र कांति प्रकाशमान हुई । उस कांति के बीच लैरंबीमाता, मंद-मंद मुस्काती प्रत्यक्ष होकर बोली" पुत्र मैने तेरी प्रार्थना सुनी है । तुम्हारी पुत्री को किसी भी तरह की क्षति नहीं पहुँचेगी । वह शीघ्र ही स्वस्थ व
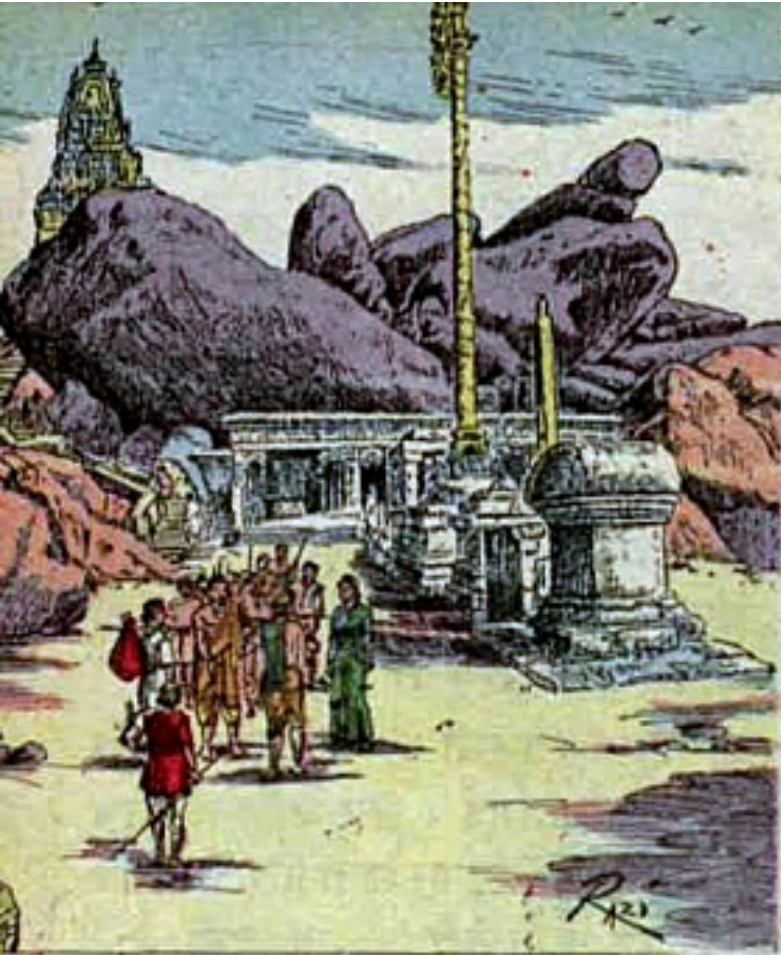
सामान्य बन जायेगी । जिसने तुम्हारी पुत्री की यह स्थिति बनायी है, उसको तुमने अपने मुँह से ही नरराक्षस कहा है । वह सचमुच नरराक्षस में परिवर्तित हो जायेगा । इस भूमि पर उसके लिए स्थान नहीं होगा । हाँ, इस पुष्प में कोई दोष नही परंतु इस दुष्ट के पापकृत्य में इसका उपयोग हुआ है, इसलिए तुम्हारी इच्छा के अनुसार ही वह फूल निकट भविष्य में विकसित नहीं होगा । भविष्य में विकसित होगा भी तो प्रकृति के विरुद्ध व्यवहार करनेवाले इससे कष्टों में फँस जायेंगे ।

"अच्छा, अब तुम सब भूल जाओ, मंदिर के अंदर आओ । आरती का समय ही रहा है । मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगी" देवी का स्वर और रूप केवल पुजारी को सुनायी और दिखायी पडे ।

संतृप्त पुजारी अंदर गया और देवी की आरती उतारी । फिर प्रशांत हृदय से मंदिर के बाहर आया । पुत्री आंख खोलकर मुस्कुराती हुई उसके पास आकर खडी हो गयी । वह अब प्रसन्न दीख रही थी । उसे अब कुछ भी याद नहीं रहा कि उसपर क्या गुज़रा हैं । वहाँ जो लोग जमा हुए उन्होंने बताया कि भाग्यश्री पर तेल छिड़कनेवाला आदमी युवराज चंद्रकेतु है और वह बचकर भाग रहा है । उसका अब रूप राक्षस का है ।

विषय जानकर राजा चंद्रकांत अपने भाई के किये पर बहुत लज्जित हुए । पुजारी के प्रति उनकी अपार भक्ति थी । वे जानते थे कि पुजारी कभी किसी का अहित नहीं चाहते । उन्होने पुजारी को स्वयं बुलाना चाहा, लेकिन इतने में पुजारी खुद आये और राजा के पास जाकर जो हुआ, उस के लिए क्षमा-याचना मांगी । राजा ने पुजारी को ढाढ़स देते हुए कहा " जब आपकी बेटी पूरी चंगी हो जायेगी, तब उसे राजमहल भेजिये । कुछ दिन मेरी बेटी से हिल-मिल जायेगी तो बिलकुल ही ठीक हो जायेगी ।"

"मैने ये सारे विषय चंद्रकांत महाराज की महत्ता को बतानेवाले तालपत्र-ग्रंथों में पढ़ा है । देवी से शापग्रस्त पुष्प सौ सालों में एक बार विकसित होंगे, इसीलिए उसे 'शताब्दिका' कहते हैं । अब इन फूलों को

देखते हुए मुझे ये सारी बातें याद आयी हैं। आप पर प्रजा की शांति और रक्षा का भार है, इसलिए आपको बताना और साथ ही आपको जागरूक करना मेरा कर्तव्य है। मुझे भय होने लगा है कि कहीं इन पुष्पों से राज्य विपत्तियों से घिर ना जाए। इस प्रकार राजगुरू ने पुष्प-संबंधी पूरा विवरण दिया।

राजा प्रतापवर्मा ने पूरा सुनने के बाद अच्छी तरह सोच-विचार करके अपनी बेटी की तरफ फिरकर कहा "प्रियंवदा, राजगुरू बता चुके हैं कि इन फूलों को राजभवन में रखना नहीं चाहिये। इसलिए इन्हें बगीचे में भेजने का प्रबंध करो"

प्रियंबंदा ने "हाँ, ऐसा ही होगा पिताजी। अभी उन्हें हटाने का इंतज़ाम करती हूँ" कहा। फिर राजगुरू से कहा" "गृरुदेव, मुझे क्षमा कीजिये। मैं बिलकुल इस बात से अवगत नहीं थी कि इन फूलों को रखने से ऐसा दुष्परिणाम निकलेगा। देखने में ये फूल मुझे इतने अच्छे लगे कि मैने तुरंत इन्हें अपने कक्ष में सजाया लेकिन मधुर सुगंधियों को व्याप्त करनेवाले इन फूलों के पीछे.इस प्रकार की दुख-गाथा का होना बड़े ही दुर्भाग्य की बात है।"

इतने में एक राजभट ने प्रवेश करके राजा को नमस्कार किया और कहा, "सेनाधिपति आपके दर्शनार्थ बाहर प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

राजा ने "अंदर आने को कहो" कहा। थोड़ी देर बाद सेनाधिपति अंदर आया और

राजा तथा राजगुरु को नमस्कार किया। "तुम्हें देखते हुए ऐसा लगता है कि कोई बड़ी समस्या लेकर आये हो" राजा ने पूछा।

"हाँ प्रभु, समस्या अवश्य बड़ी है। आज सबेरे से हमारे राज्य के दक्षिणी सरहद से लोग घर छोड़कर तितर-बितर हो रहे हैं। किसी की समझ में नहीं आया है कि ऐसा क्यों हो रहा है? बस डर के मारे लोग लक्ष्यहीन होकर भाग रहेहैं। कुछ राजधानी की तरफ़ आ रहे हैं। सुबह होते-होते समुद्री तट के सारे घर धराशायी हो गये हैं। मालूम हुआ है कि यह सब भूकंप से या समुद्री लहरों से नहीं हुआ है। घर गिर गये पर कोई आवाज नहीं आयी। समाचार मिला

है कि भाग्यवश लोगों की मृत्यु नहीं हुई है। ऐसा क्यों हुआ, यह किसी के अनुमान के बाहर है"। सेनापति गंभीरवर्मा ने बताया।

राजा ने पूछा "प्रजा की रक्षा का कुछ प्रबंध किया?"

"हाँ, उसी समय मैंने कुछ सैनिकों को समुद्री तट पर रक्षा के लिए भेजा है। किसी पर शक हो तो उसे गिरफ्तार करके लाने का हुक्म भी दे चुका हूँ। बहुत से सैनिकों को मुसीबतों में फँसे लोगों के सहायतार्थ भेजा भी है। कुछ सैनिकों को नगरद्वार पर तैनात किया है। उनको आज्ञा दी कि भागकर आये हुए लोगों को वे शिबिरों में लायें। इन बातों को आपसे बताने आया हूँ।" सेनाधिपति ने कहा। "जिनके घर-बार बरबाद हो चुके हैं, उनको हमारे राजप्रासाद, में ही शरण दे सकते थे। प्रधानतया स्त्रीयों और बच्चों को यहाँ भेजो" प्रियंवदा ने बडी बैचैनी से कहा।

"सही सोचा है बेटी। तुम्हीं सोचकर बताओ कि हमारे महल का कौन-सा भाग उन्हें ठहराने के लिए उचित होगा। यहाँ आनेवाली स्त्रीयों और शिशुओं के लिए आवश्यक प्रबंध करने का भार तुम्ही संभालो तो अच्छा होगा।" राजा ने प्रियंवदा से कहा और सेनाधिपति की ओर मुड़कर बोले "हमारी प्रजा को कोई कष्ट नहीं पहुँचना चाहिये। इस विपत्ति के समय उनकी रक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है। उनके भय को दूर करना हमारा धर्म है। इसलिए इस आकस्मिक दुख से दुखी पीड़ितों को कोई कष्ट ना हो, इसकी देखभाल का भार तुम पर है। फिर सोचेंगे कि उनको कौन-सा काम सौंपा जाए"। "गुरुदेव, आपकी क्या सलाह है" राजाने पूछा।

"हाँ, ऐसा ही करो राजन" कहकर थोड़ी देर गंभीर मुद्रा में सोचते हुए गुरुदेव बोले "सेनाधिति जो समाचार ले आये हैं, उनसे 'शताब्दिका' के बारे में मेरे जो संदेह हैं वे कहीं सच ना निकलें, इसी का मुझे भय है महाराज।"

(शेष)

सच्चे दोस्त

धुन का पक्का विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया । पेड़ से लाश को उतारा और कंधों पर रखा । पहले की तरह मौन हो श्मशान से चल पड़ा । तब लाश के अंदर का बेताल बोला "राजा, यह श्मशान बड़ा ही डरावना है । तुम इस आधी रात को इस डरावने श्मशान में मुसीबतों की परवाह किये विना इस लाश को ढोये जा रहे हो । यह देखकर मुझे शक हो रहा है "ये सारे कष्ट तुम अपने लिए उठा रहे हो या परायों के लिए? अगर यह सब कुछ अपने लिए ही हो तो मैं कोई सलाह नहीं दे पाऊँगा । ऐसा ना होकर, किसी की आज्ञा का पालन करने के लिए अगर ये कष्ट उठा रहे हो, तो तुम्हें चेतावनी देने के लिए एक सलाह देना चाहूँगा । कुछ अवसरों पर आदमी बिना सोचे-विचारे, बड़ों की आज्ञाओं का पालन करना अपना धर्म समझकर, व्यर्थ की कठिनाइयों में फँस जाता है । परंतु आज्ञा

वेतालकथा

देनेवाले बड़े लोग कार्य-सफलता के बाद दावा करते हैं कि उन्हीं की वजह से वह काम कामयाब हुआ है । अगर उनसे कहा जाए कि उनका यह दावा ठीक नहीं तो वे बेतुके जवाबों से असली बात को टरका देते हैं । मतलब यह हुआ कि कामयाबी किसी की और शोहरत किसी और की । उदाहरणस्वरूप तुम्हें धनदत्त नामक एक व्यापारी की कहानी सुनाता हूँ, ध्यान से सुनो ।" यों वह कहने लगा ।

एक शहर में धनदत्त नामक एक व्यापारी था । वह अपना माल जहाजों पर विदेश भेजता और व्यापार करता था । जब उसने देखा कि व्यापार काफी अच्छा चल रहा है और कमाई भी तगडी है तो जितना पैसा उसके पास था, उससे खुद एक जहाज खरीदा । अब उसका जहाज देश-विदेशों जाने लगा । शहर के बहुत से व्यापारी अपना माल उस के जहाज से भेजने लगे । अचानक एक दिन समाचार मिला कि उसके और दूसरे व्यापारियों के माल के साथ जो जहाज निकला, वह बीच समुंदर में डूब गया ।

कुछ ऐसे व्यापारी भी हैं, जो धनदत्त के व्यापार की कामायावी पर उससे द्वेष करते हैं । उन्हें अब उससे बदला लेने का अवसर मिल गया । उन्हें इस बात की चिंता नहीं कि उनका भी माल जहाज के साथ डूब गया है । बस, उनको चाहिये था धनदत्त किसी तरह से भी हो, फकीर बन जाए । इस मौके की ताक में बैठे उन सबों ने धनदत्त पर दबाव डाला कि उनके माल का पैसा चुकाया जाए । उसने उनके माल का हिसाब लगाकर उनका पैसा चुका दिया । इससे उसका गुज़ारा होना मुश्किल हो गया ।

धनदत्त का अपना एक महल है, जिसकी कीमत पचास हज़ार अशर्फियों की होगी । उसमें कितने ही नौकर रहते हैं । इस नुकसान के बाद उसने उन सबको निकाल दिया । वह महल अब गिरवी पर है । दो महीनों में वह रक़म चुकायी नहीं जाए तो वह भी उससे छिन जायेगा । उसे बेचकर कर्ज चुकाना भी चाहे तो कोई भी उसके लिए बीस हजार से ज्यादा देने तैयार नहीं । इन परिस्थितियों में धनदत्त ने अपने बेटे को

बुलाया और कहा "बेटे, अब तुम्हारी इतनी उम्र हो गयी है कि तू मेरा साथ दे । अब तक तुमने केवल हमारा वैभव दी देखा है । अब हम मुश्किलों से घिरे हुए हैं । यह मेरा दुर्भाग्य है कि जब मैं व्यापार तेरे सुपुर्द करना चाहता था तब हमें भारी नुकसान पहुँचा हैं । ऐसे ही समय में मनुष्य की ईमानदारी और धैर्य की परीक्षा होती है । अब हमारे लिए ऐसी ही परीक्षा का समय आसन्न हुआ है । हमें धैर्य से इस स्थिति का मुक़ाबला करना होगा । मेरा ख्याल है कि एक तरह से यह हमारे लिए अच्छा ही हुआ है । अब हमें थोड़ा-सा भी धन मिले तो पर्याप्त है । उससे कोई नया व्यापार शुरू कर सकता हूँ और खूब कमा भी सकता हूँ । लेकिन इस शहर में हमारी मदद करनेवाला कोई नहीं है । अब तुम मेरा निजी गाँव रत्नापूर जाओ । वहाँ हमारे दूर का रिश्तेदार चंद्रशेखर है । वह करोड़पति है । सिर्फ वही हमारी मदद कर सकता है । रिश्ते में वे तेरे दादा लगते हैं । तुम उनसे पच्चीस हज़ार अशर्फियाँ माँगकर लाना । उस रकम से मैं यहाँ का कर्ज चुका दूँगा, और बाकी रकम से तुम्हें सिखाऊँगा कि व्यापार कैसे करना है ।"

देवदत्त तुरंत निकल पड़ा । निकलने के पहले उसके पिता ने उससे कहा "शाम होते-होते तुम मोतीपुर पहुँचेगे । वहाँ मेरा जानी दोस्त रमाकांत है । उस रात को उसी के घर में ठहर जाना । सबेरे निकलोगे तो

धूप के आने के पहले ही रत्नापुर पहुँच जाओगे । किसी कारण चंद्रशेखर गाँव में ना हो तो मेरे बाल्य-मित्र विनयसेन के घरमें ठहर जाना । भूलकर भी उसे या रमाकांत से पैसे ना पूछना । अगर तुमने पूछा तो वे अपने को ही सही. गिरवी पर रखकर हमें धन देगे । लेकिन उन्हें तक़लीफ पहुँचाना हमारे लिए ठीक नहीं होगा" ।

पिता के कहे मुताबिक देवदत्त मोतीपूर के रमाकांत के यहाँ गया । बड़े प्रेम से उसने उसका आदर किया । देवदत्त से उनकी पूरी हालत मालूम हुई "इन परिस्थितियों में हम से ना माँगकर चंद्रशेखर से धन माँगने की सूझ तेरे पिता को कैसे सूझी । तेरे पिता के माँ-बाप जब उनके बचपन में ही गुज़र
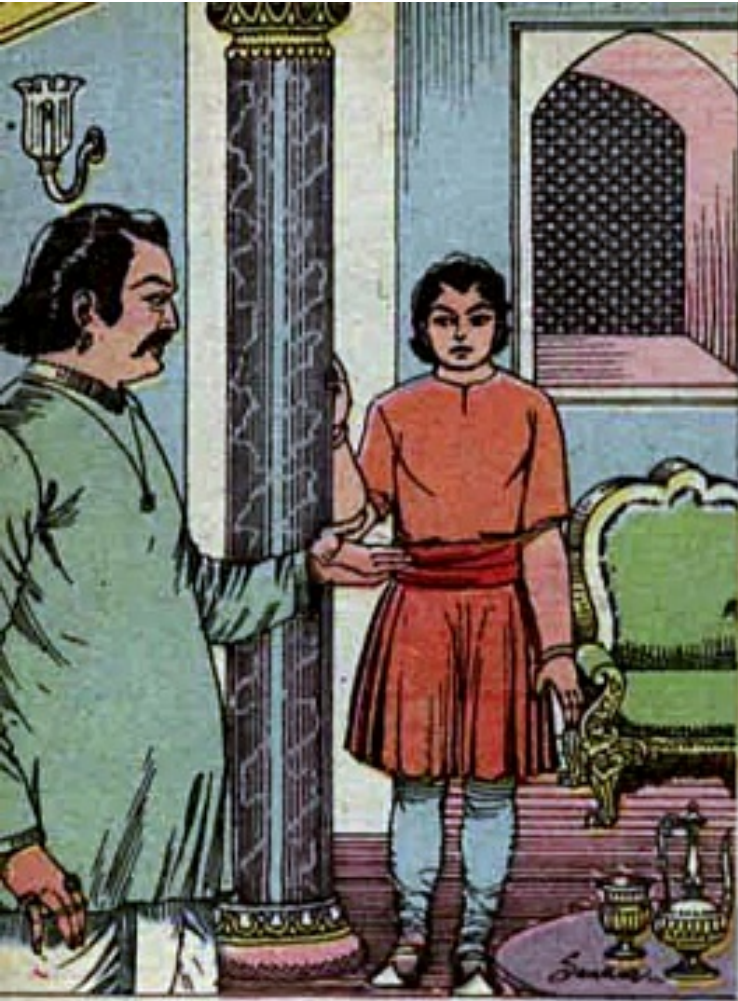
गये तब चंद्रशेखर तुम्हारे घर में रहने लगा । धोखा देकर तुम्हारी सारी जायदाद हड़प कर गया । किसी तरह तेरे पिता शहर पहुँचकर अपनी हालत सुधार पाये । अनेकों मुसीबतों का सामना करके उन्होंने व्यापार किया और पैसे कमाये, लेकिन चंद्रशेखर से कभी भी मदद नहीं मांगी । और ना ही उसने तुम्हारे पिता की मदद देने की सोची । ऐसा कंजूस चंद्रशेखर भला तेरे पिता को क्योंकर पैसे देगा" रमाकांत ने पूछा ।

देवदत्त ने कहा "आपसे पैसे माँगने से पिताजी ने मना कर दिया है ।"

थोड़ी देर सोचकर "उन्होंने ऐसा क्यों कहा, मैं खूब जानता हूँ । तकलीफ़ों में मैं उनकी मदद नहीं कर सका, परंतु जब तेरे पिता कमाने लगे थे, तब उनसे मैंने काफी मदद पायी । उन्हें पाँच हजार आशर्फियाँ मुझे देनी हैं । ऐसे आड़े वक़्त नही दूँगा तो कब कर्ज चुकाऊँगा? वह रक़म ले जाओ और अपने पिता से कहो, मैं अब आर्थिक समस्याओं से मुक्त हूँ ।" रमाकांत ने कहा ।

देवदत्त ने जब कहा कि लौटते हुए मैं यह रक़म ले लूँगा तब रमाकांत ने बड़ी गंभीरता से कहा "मैंने जैसे कहा वैसे तुमने नहीं किया तो अपने पिता ,में बोलना कि मैं कभी उसकी सूरत तक नहीं देखूँगा ।"

देवदत्त वहाँ से निकलकर रत्नापुर पहुँचा । उस समय चंद्रशेखर गाँव में नहीं था । पिता के कहे मुताबिक वह विनयसेन के घर गया । वह बडे प्यार से देवदत्त के गले लगा और जाना कि वह किस काम पर आया हुआ है । विनयसेन नाराज़ होता हुआ बोला "चंद्रशेखर तुम लोगों की जायदाद हडपकर खुद धनवान बन गया । फिर भी उसके धन की प्यास नही बुझी । मेरी समझ में नही आता कि तुम्हारे पिता ने फिर भी तुम्हें उसके पास कैसे भेजा है? तुम लोगों के साथ उसने बडा अन्याय किया है । यही वजह होगी कि वह तुम्हारे आने की खबर सुनकर कहीं और दूसरी जगह चला गया होगा । उसे डर है कि कहीं तुम उससे रक़म ना मांगो । जब तक उसे नहीं मालूम होगा कि तुम चले गये हो, वह वापस नहीं आयेगा । उसका इंतज़ार करना बेकार

है । तुम्हें जो रक़म चाहिये, उसका इंतज़ाम मैं करूँगा" ।

उसकी इन बातों से देवदत्त घबरा गया और पिता की चेतावनी को याद दिलाते हुए बोला "आप जैसे अच्छे लोग जब मौजूद हैं, तो मेरी समझ में नहीं आता कि मेरे पिता चंद्रशेखर को ही अपना आधार क्यों माने बैठे हैं? मोतीपुर के रमाकांत भी हमारी मदद करने तैयार हैं ।"

विनयसेन हँसता हुआ बोला "इस गाँव से जो भी जाए, पिताजी ने हर एक की भरसक मदद की । जिस किसी ने भी जितनी रक़म चाही, दी । उनसे वह रक़म वापस लेना उन्हें अच्छा नहीं लगता । पर ऐसे आड़े वक़्त हम उनके काम ना आयें तो हमारी दोस्ती का क्या मतलब? हम भी तो अपना पैसा नहीं दे रहे हैं, उनसे जो लिया, उसे ही तो वापस दे रहे हैं । भला यह भी कोई मदद हुई? मेरे अलावा इस गाँव में बहुत से लोग हैं जिन्हें तुम्हारे पिताजी को कर्ज़ चुकाना है । उन सब से मैं पैसे इकट्ठे करूँगा । इससे हमें कोई तकलीफ़ नहीं होगी ।"

देवदत्त ने फौरन यह प्रस्ताव नहीं माना । वह वहाँ दो दिन रहा । विनयसेन ने अपनी और दूसरे लोगों से वसूल की हुई तीस हज़ार अशर्फियाँ उसे दीं और बताया कि चंद्रशेखर का कोई पता नही है । देवदत्त । वह रकम और वापसी में रमाकांत की दी हुई रक़म लेकर जब घर पहुँचा तो देखा कि वहाँ

एक बूढ़ा आदमी है ।

धनदत्त ने उसका परिचय बेटे से कराया । कहा "इनका नाम चंद्रशेखर है । रत्नापुर से किसी काम पर आकर यहाँ बीमार पड़ गये हैं । इन्हें हमारे यहाँ ठहराकर उनका इलाज करवाया हैं । ये अपने साथ जो पैसे लाये, वह ख़तम हो चुका है । इनकी वापसी यात्रा के पैसों का इंतज़ाम हमें ही करना होगा । रिश्ते में ये तेरे दादा लगते हैं । पैर छूकर आशीर्वाद लो ।"

देवदत्त ने उनके पैर छुये और उनकी यात्रा का प्रबंध किया । जो रक़म वह ले आया, पिता को दिया और कहा "जब कि आपके इतने अच्छे दोस्त हैं तो आपने मुझे क्यों उस कंजूस चंद्रशेखर के पास ही भेजा है?

मुझे आपके इस काम पर बड़ा आश्चर्य होता है ।"

धनदत्त ने बताया "तुम्हें सांसारिक बातों के साथ-साथ व्यापारिक पद्धतियों के गुण-अवगुणों का प्रशिक्षण भी देना चाहता हूँ । चंद्रशेखर के पास तुम्हें भेजना उस प्रशिक्षण का एक भाग मात्र है ।"

यह कथा सुनाने के बाद बेताल ने कहा "राजा, धनदत्त के जब इतने अच्छे दोस्त हैं, अपने बेटे को उनके पास ना भेजकर धोखेबाज़ और कंजूस चंद्रशेखर के पास भेजना क्या विवेकपूर्ण व संगत कहा जा सकता है? उल्टे अपनी त्रुटि छिपाने के लिए उससे सांसारिक व्यवहार व व्यापारिक गुणों के प्रशिक्षण की दुहाई देना केवल बात को घुमा-फिराकर कहना नहीं है? बेटे ने कार्य साधा है, लेकिन धनदत्त स्वयं इस समस्या के निवारण का श्रेय लेना चाहता हैं । क्या इससे साबित नहीं होता कि धनदत्त में ईमानदारी का अभाव है? जानते हुए भी मेरे इन संदेहों का जवाब नहीं दोगे तो तुम्हारा सिर फट जायेगा ।"

विक्रमार्क ने जवाब में कहा "धर्मदत्त जीवन के पारखी हैं । चंद्रशेखर के पास पैसों के लिए बेटे को भेजा है, इससे उसके दोस्त भाँप जायेंगे कि उसकी स्थिति कितनी विषम है । इस स्थिति में भी अपने दोस्तों से रकम ना मांगने से उसके दोस्तों के दिलों में उसके प्रति आदर और बढ़ जायेगा । इस तरह उन लोगों ने बिना मांगे ही धनदत्त का कर्ज़ चुका दिया और साबित किया कि वे सच्चे दोस्त हैं । अपनी गाढ़ी मित्रता को साबित करने के लिये ही धनदत्त ने चंद्रशेखर को साधन बनाया । इस वजह से पिता ने अपने बैटे को जो जवाब दिया, उससे उसमें उसकी ईमानदारी का कोई अभाव नहीं दीखता ।"

इस प्रकार राजा के मौन का भंग करके बेताल लाश के साथ गायब हो गया और पेड़ पर चढ़ बैठा । (कल्पित)

आधार-जे. रामलक्ष्मी की रचना ।

भुलक्कड मंत्र

काशीनाथ धनवान किसान था । ठाठ से कर्ज लेने में और उन्हें चुकाने के वक़्त ठेंगा दिखाने में उसकी बराबरी का कोई नहीं था ।

एक दिन अपने चार चापुलूस दोस्तों को लिये हाथ की लकड़ी घुमाते हुए गली से गुज़रने लगा । उसे जीवन की मिठाई की दुकान से ताज़ी घी से बनी मिठाई की सुगंध आने लगी । उसके मुँह में पानी भर आया । बड़े ठाठ से अपने चापुलूस दोस्तों के साथ जीवन की दुकान में उसने प्रवेश किया । "अरे जीवन, गली से गुज़र रहा था तो तेरी मिठाई की सुगंध ने मुझ पर जादू चला दिया और यहाँ मुझे खींच लाया । मिठाई सिर्फ सुगंध से ही नहीं: स्वाद से भी क्या उतनी ही स्वादिष्ट होगी" हँसते हुए पूछा ।

बड़े विनय से जीवन ने कहा, "खाकर तो देखिये । आप ही को मालूम हो जायेगा कि कैसा है?"

काशीनाथ एक-एक करके अपनी पसंद की मिठाई खाता रहा और अपने चापुलूस दोस्तों को भी खिलाता रहा । उसे इस बात की चिंता नहीं कि उसे इसके लिए कितनी रक़म देनी होगी? पहले ही वह निर्णय कर चुका था कि जीवन को एक फूटी कौड़ी भी नहीं दूँगा । खा चुकने के बाद काशीनाथ ने कहा "मिठाइयाँ ज्यादा तो अच्छी नहीं, पर अच्छी हैं ।" फिर जीवन की तारीफ़ की और कहा "ठीक है, अब बताओ, पूरी रक़म कितनी है?" जीवन ने तख़्ते पर पूरा हिसाब लगाया और कहा कुल पचास रुपये हुए हैं ।

काशीनाथ थोड़ी देर अपनी जेब टटोलता रहा और कहा "धत् मेरी स्मरणशक्ति की । देखा, क्या हुआ जीवन? पैसा एक कुर्ते की जेब में रखा और दूसरा कुर्ता पहनकर बाहर निकला हूँ । ठीक है, अब आसमान कोर्ड थोड़े

-भार्गवी-

ही गिरा है । मैं जब इधर से गुज़रूँगा, याद दिला देना कि कितना देना होगा ।"

जीवन भली-भाँति जानता है कि काशीनाथ हिसाब चुकानेवालों में से नहीं है । पर जीवन भी कोई कम नहीं । बातों में वह विनयी है, पर काम का वह बड़ा पक्का है । जीवन ने निश्चय कर लिया कि काँटे को काँटे से ही निकालना हैं । उसने बड़े विनय से कहा "महाराज, मुझमें भी स्मरणशक्ति कहाँ रह गयी । मैं भी बड़ा भुलक्कड़ हूँ । इस बात में मैं आपसे कोई कम नहीं । इसलिए आपका नाम और आपकी रकम का हिसाब इस दीवार पर लिखकर रखता हूँ । जब कभी देखूँगा तो आपके कर्ज़ की याद मुझे आती रहेगी ।" कहते हुए बड़े-बड़े अक्षरों में दीवार पर हिसाब लिखने लगा ।

यह देखकर काशीनाथ घबरा गया "अरे, इतने बड़े-बड़े अक्षरों में मेरा नाम और मेरा हिसाब लिख रहे हो । जो भी तेरी दुकान में आयेंगा, देखेगा । इससे मेरी कितनी बडी बेइज्ज़ती होगी" बोला ।

जीवन ने ऐसी सूरत बनायी मानों उसे अपने किये पर बड़ा पछतावा हुआ है और कहा "साहब, आपने सौ फी सदी सच कहा है । मैंने तो इस बाबत कुछ सोचा ही नहीं । आप अपना रेशमी शाल मुझे दीजिये । खूँटे में लटका रखता हूँ । जब कभी मैं उसे देखूँगा और जब कभी आपको लगेगा कि वह मेरे कंधे पर नहीं है तो दोनों को हिसाब का स्मरण हो जायेगा । हम दोनों के भुलावेपन का यही परिष्कार है ।"

काशीनाथ की परिस्थिति अब बडी नाज़ुक हो गयी । आगे गढ़ा तो पीछे कुआँ ।

शाल जीवन को दे या हिसाब दीवार पर रहे दोनों से अवश्य उसका नाम खराब दो जायेगा । उसकी इज्ज़त मिट्टी में मिल जायेगी ।

काशीनाथ जान गया कि उसका भुलक्कड़ मंत्र जीवन के पास कुछ काम नहीं करेगा तो चुपचाप उसने जीवन को पैसे दिये और दुकान से तेज़ी से बाहर निकल पड़ा ।

चन्दामामा परिशिष्ट-५५

भारत के पशु-पक्षी :

रामचिरैया

कुछ पक्षी मात्र पेड़ की शाखाओं को छोड़कर भूमि पर अपने घोंसले बनाते हैं । उनमें से रामचिरैया पक्षी बहुत ही प्रधान हैं । सामान्यतया वे नाले के किनारे की बांध पर एक मीटर तक के लंबे सुराग़ बनाकर इतनी विशाल जगह बना लेते हैं, जिसमें वे पाँच-छह अंडे रख सकें । मार्च-जून के बीच वे अंडे देते हैं ।

दुनिया भर के रामचिरैया पक्षी सौ से अधिक प्रकार के होते हैं । उनमें से प्रधान हैं, मैना पक्षी के परिमाण में निम्न भाग में सफेदी वाले । उनके पंख जगमगाते नीले रंग के हैं । पंखों के नीचे का भाग बैंगनी होता है । इनकी चोंच लाल होती है । यह मछली और मेंढ़क के बच्चों को पकडने के लिए सुलभ और तीखी मज़बूत नोखवाली होती है । पानी के ऊपर के सतह पर लटकती डालियों पर ये पक्षी बैठे होते हैं । जैसे ही पानी में आहार दीखता है, उड़कर उन्हें पकड़कर ले जाते हैं, और किसी पथ्थर या पेड की शाखा से मारकर सिर से खाना शुरू करते हैं ।

इनमें से सफ़ेद और काले रंग के रामचिरैया पक्षी भोजन के अन्वेषण में बड़े ही तेज़ होते हैं । पानी के ऊपरी सतह पर से एक जगह से दूसरी जगह पर उड़ते हुए जैसे ही भोजन-पदार्थ दिखाये पड़े, झट से पकड़ लेते हैं ।

इनमें से हिमालय-प्रांत के रंगीन पक्षी ही परिमाण में बड़े हैं । वे समुद्री भाग से करीब ८०० फुट की ऊँचाई पर निवास करते हैं ।

आज का भारत : साहित्य-दर्पण में

लाठी चलाने में और बाघ के खेल में कुशल पुल्लय्या नामक युवक अपने गाँव के छोटे-बडे सब वर्ग के लोगों को अपनी कला से उल्लसित करता था । वह अकसर सपने देखा करता था कि विवाह करके धैर्य-साहस में उससे भी उत्तम बेटे को जन्म दूँ । झूठ बोलनेवाले और चोरी करनेवालों से उसे तीव्र घृणा थी । उसका सपना था कि उसका बेटा बडा होकर चोरों को पकड़ने में खूब कामयाब हो और नाम कमाये ।

पुल्लय्या ने नीलि नामक लडकी से प्रेम करके विवाह किया । नीलि भी अपने पति के ही तरह सच्चाई

बलिवाडा कांताराव का 'वंचित भाई'

और ईमानदारी से प्रेम करती थी । गरीब होते हुए भी वे दोनों बडे ईमानदार थे । खाने-पीने के लिए जो अनाज चाहिये, वे उसके लिए रात-दिन कडी मेहनत करते और फसल उगाते । कुछ ही सालों में उनकी आशा फली और उन्हें एक सुंदर बेटा पैदा हुआ । बेटे का नाम रखा 'मल्लू' । राष्ट्र के दूसरे प्रांतों में चावल की फसल खराब रही, इसलिए सरकार ने निश्चय किया कि वह उस गाँव के किसानों से अधिक से अधिक चावल खरीदे । सरकार ने इसके लिए हुक्म भी जारी किये । पुल्लय्या को सरकार का यह काम ठीक नहीं जँचा । चावल खरीदने, जो सरकारी अफसर गाँव में आये थे, उन्हें उसने रोका । पुलिस आयी किन्तु पुल्लय्या टस से मस ना हुआ । वे उसे गिरफ्तार करके ले गये ।

पुल्लय्या के जेल से छुटकारे के लिए, उस गाँव के राजू नामक धनवान ने उसकी पत्नी नीलि को आर्थिक सहायता दी । लेकिन जो रकम उसने दी, उसके लिए अधिक ब्याज वसूल करके पुल्लय्या की थोडी ज़मीन अपने कब्जे में कर ली । बदमाश उस धनवान को, एक रात उसी गाँव के एक अंधे ने घायल किया क्योंकि किसी और बात पर दोनों में बैर था । पुलिस ने पुल्लय्या को इस घटना का जिम्मेदार घोषित किया और उसे गिरफ्तार करने गाँव में आये । इस मुसीबत से बचने के लिए पुल्लय्या ने अपना छोटा-सा घर राजू को बेच दिया ।

खेत और घर खोकर पुल्लय्या बेचारा क्या करता? खाली हाथ और खाली पेट अपनी बीबी और बच्चे के साथ शहर पहुँचा। सच्चा और ईमानदार रहकर पुल्लय्या गाँव में इज्जत से ज़िन्दगी गुज़ारता था, पर आज उसकी तकलीफ़ों के दिन शुरू हो गये। फिर भी वह अपनी पत्नी और बच्चे को साथ पाकर शांत था।

उसने अपनी जीविका के लिए शहर में तरह-तरह की कोशिशें कीं, पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ। बीबी और बेटा भूख से तडप रहे थे। उस दरम्यान उसका परिचय दो चोरों से हुआ। धीरे-धीरे वह भी उनसे हिल-मिल गया।
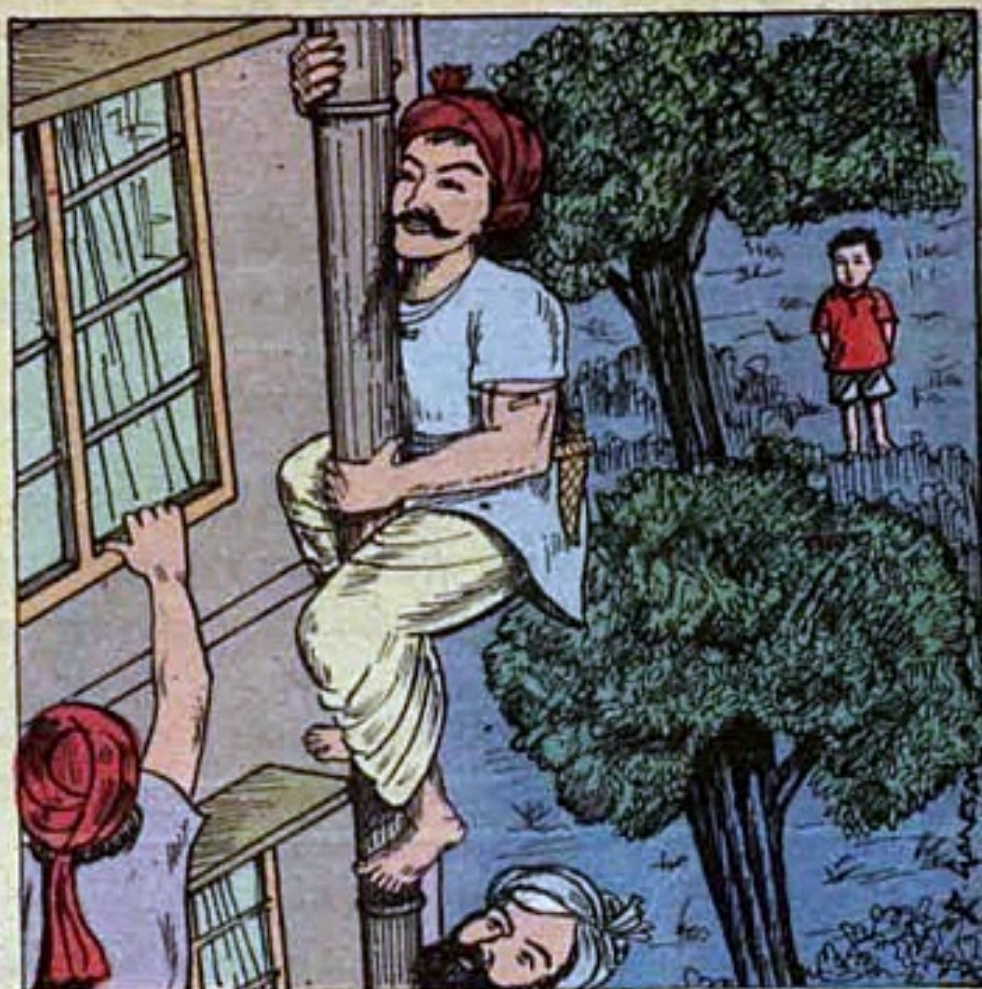
एक दिन रात को तीनों एक धनवान के घर चोरी करने पहुँचे। आवाज़ से चौकन्ना होकर धनवान जागा। उसने देखा कि दो चोर घर के बाहर की नल पकडकर ऊपर चढ़ रहे थे तो उसने बंदूक निकालकर उनको निशाना बनाया। इतने में पुल्लय्या ने, जो पीछे से अ रहा था, धनवान के सिर पर ज़ोर से मारा। धनवान का निशाना चूक गया और यों तीनों चोर भाग निकले।

लेकिन उस रात पुल्लय्या की जानकारी के बिना, उसका लाडला बेटा मल्लु पिता के पीछे-पीछे गया और उस देखा कि उसका बाप एक महल की सीढ़ियों पर चढ़ रहा है। सबेरा होने पर भी जब उसका बाप वापस नहीं आय तब वह मासूम सीधे महल के अंदर गया और अपने पिता के लिए रोने लगा। पुलिस आयी। मल्लु ने पुलिस व बताया कि उसके पिता को रात को महल की सीढ़ियों पर चढ़ते हुए उसने देखा है। उसने पिता और उन दो दोस्त के नाम भी बता दिया। पुलिस ने उन तीनों चोरों को आसानी से पकड लिया। उसका बेटा चोरों को पकडने कुशल हो, पुल्लय्या का यह सपना इस प्रकार साकार हुआ। इतनी मुसीबतों के बावजूद पुल्लय्या की पत्नी नीि का धैर्य नहीं टूटा। अच्छाई और सच्चाई के प्रति उसका अगाढ़ विश्वास जैसे के तैसे बना रहा।

बलिवाडा कांताराव का मशहूर तेलुगु उपन्यास 'वंचित भाई' की यह कहानी है। यह तेलुगु ग्राम्य जीवन व दर्पण है। जिस गाँव में वह जन्मा, वहाँ रह ना सकने की स्थिति में शहर में गये हुए एक नादान युवक की य जीवन-गाथा हैं, जिसका चित्रण लेखक ने बहुत ही अद्भुत ढंग से किया है। लगता है, मानों, यह कहानी हमा आँखों के सामने ही गुज़री हो। यह उपन्यास अभी हाल में ही प्रकाशित हुआ है। अनेकों भारतीय भाषाओं इसका अनुवाद भी हुआ है।

क्या तुम जानते हो?

१. उत्तर भारत में बारह सालों में एक बार मनाया जानेवाला उत्सव कौन-सा है?
२. मनुष्य का सर, हाथ और घोडे के शरीर के रूप का कौन-सा अजीब जानवर किस पुराण में मिलता है?
३. सुप्रसिद्ध खुजराहो मंदिर कहाँ हैं?
४. डयान्यूट नदी एक पूर्वी यूरोपीय नगर से प्रवाहित होती है । वह कौन-सा नगर है?
५. चोलों की राजधानी कौन-सी है?
६. दक्षिण एशिया का एक देश है, जो कभी किसी दूसरों से शासित नही हुआ, वह कौन-सा देश है?
७. समुद्री धरती के आधार पर कौन-सा पहाड बडे से बडा है । उसकी ऊँचाई कितनी है?
८. ग्रीक के दूत मेगस्थनीज़ को किस ग्रीक राजा ने हमारा देश भेजा है? किस राजा के दरबार को उसने अलंकृत किया?
९. 'राफ्लीसिया' नामक फूल की विशेषता क्या है?
१०. सामान्य मक्खी कितने दिन जीवित रहती है?
११. अफ्रीका में सब से बडा सरोवर कौन-सा है?
१२. मानव-कपाल में कुल कितनी हड्डियाँ हैं?
१३. पोर्तुगीज़ के नाविकों ने जब श्रीलंका में कदम रखा तब उन्होंने उसका क्या नाम रक्खा?
१४. हिन्दुओं के पुराणों में बारिश के भगवान का नाम क्या है?
१५. एक तानाशाह शुरू-शुरू में अध्यापक और पत्रकार था, वह कौन है?
१६. पहला नोबल शांति-पुरस्कार पानेवाला कौन है?
१७. सिक्खों का पवित्र ग्रंथ कौन-सा है?
१८. एक पेड़ के छिलके से निकाला जानेवाला द्रव पदार्थ मलेरिया के इलाज के लिए औषध के रूप में इस्तेमाल में लाया जाता है । वह कौन-सा पेड है?

उत्तर

१. कुंभमेला ।
२. ग्रीक पुराण ।
३. मध्यप्रदेश ।
४. बुडापेस्ट, नदी के एक किनारे पर बुडा और दूसरे पर पेस्ट हैं ।
५. तंजावूर ।
६. थायलांड ।
७. हवाय में स्थि मौनाक्ली । इसकी ऊँचाई ३२,००० फुट, समुद्र की सतह से ऊपर १३,७८४ फुट पर है ।
८. ग्रीक राजा सेल्यूकस । चंद्रगुप्त मौर्य का दरबार ।
९. संसार का सब से बडा फूल इंडोनिशिया में है ।
१०. चार दिन ।
११. उगांडा, केन्या, टाँजानिया के बीच फैला विक्टोरिया सरोवर (२७,००० वर्गमील) ।
१२. २९ हड्डियाँ ।
१३. ज़ीलान ।
१४. वरुण ।
१५. इटली का निवासी मुसोलिन ।
१६. जीन हेनरी ड्यूनांट, रेडक्रास का संस्थापक है ।
१७. आदिग्रंथ (गुरुग्रंथ साहब) ।
१८. 'सिंकोना' पेड ।

कंजूस का धन

बहुत पहले एक शहर में भद्र नामक एक भाग्यवान रहता था । सब कहते थे कि ऐसा कंजूस ना कभी पैदा हुआ और ना ही पैदा होगा ।

एक दिन भद्र पैदल कहीं जा रहा था तो पैर फिसलकर गिर पडा । तब उसकी जेब से रुपये नीचे गिर पड़े । भद्र तुरंत उठा और रुपये इकट्ठे कर लिये । एक रुपया कम पड़ गया । घबरा गया और इधर-उधर ढूँढ़ने लगा । लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ ।

भद्र थोड़ी दूर जाकर खडा हो गया और बहुत देर तक देखने लगा कि वह रुपया उसको नहीं तो शायद किसी और को मिल जाए । उस रास्ते से बहुत-से लोग गुज़रे लेकिन उसे लगा कि वह रुपया किसी को मिला नहीं है ।

हताश भद्र घर पहुँचा और उसने सारी बात अपनी पत्नी से बताया तो उसने कहा "आप जानते हैं कि इस शहर में न्याय का संपूर्ण आचरण होता है । शाम को आप न्यायाधिकारी के पास जाइये । आपका रुपया जिसे मिलेगा, वह ज़रूर वह रुपया उन्हें सौंपेंगा ।" इतने में भद्र का जो रुपया खो गया था, वह सँपेरे नागराज को झाड़ियों के पीछे मिला, जहाँ वह साँप पकड़ने गया था । उसके जीवन में कभी ऐसा नहीं हुआ था तो उसकी खुशी का ठिकाना ना रहा । वह रुपये लेकर शराब पीने दुकान गया ।

दुकान के मालिक ने उसे आश्चर्य से देखकर कहा "अरे, तुम तो कभी इस तरफ़ आते ही नहीं । क्या बात है नागराज?"

"मैं खुद नहीं जानता, परंतु मेरी कुटिल बुद्धि को सूझी है यहाँ आने की" कहता हुआ नागराज ने रुपया दिया और शराब पीकर दुकान से चलता बना ।

उसी समय उधर से गुज़रता हुआ भीम

-नरेंद्र-

नामक एक पहलवान दुकानदार को दिखायी पड़ा। मालिक ने उसे बुलाकर उसके कानों में कहा "हर आदमी का कोई ना कोई दुश्मन तो होगा ही। मालूम नहीं, क्यों आज रामनाथ से बदला लेने की इच्छा हो रही है। वही रामनाथ, जो राम मंदिर के बग़ल में रहता है। तुम जाकर उसे खूब पीटोगे तो मैं यह रुपया दूँगा।"

किसी को मारने या पीटने की भीम की आदत नहीं है। उसकी तो यही तीव्र इच्छा है कि ईमानदारी से किसी से कुश्ती लड़ूँ और विरोधी को चित कर दूँ, इससे शोहरत मिलेगी और लोग उसकी वाहवाही करेंगे। दुकानदार की माँग को वह इनकार करने ही वाला था कि दुकानदार ने उसके हाथ में रुपया थमा दिया। भीम बिना कुछ कहे रुपया लेकर चला गया और रामनाथ की खूब पिटाई की। रामनाथ रोता हुआ बोला।" "बिना किसी वजह के तुमने मुझे मारा है। भगवान इसके लिए तुम्हें अवश्य दंड देंगे।"

भीम को अपने किये पर पछतावा हुआ। मंदिर जाकर पुजारी को वह रुपया उसने दिया और कहा कि मेरे प्रायीतात्त के लिए आप पूजा कीजिये। जैसे ही रुपया पुजारी के हाथ में आया, उसे लगा कि वह पास की गली में रहनेवाली वसंता के घर जाऊँ और उसका गाना सुनूँ। वह सूरदास के पद अच्छा गाती है। पैसे दिये बिना वह किसी के लिए गाना नहीं गाती। पुजारी फ़ौरन मंदिर के दरवाज़े बंद करके वसंता के घर गया, रुपया दिया और अपनी इच्छा व्यक्त की।

वसंता ने पुजारी को अच्छा गीत सुनाया और उसे भेज दिया। बाद रुपया ढूंढा तो उसे वह नहीं मिला। उसने पूरा घर ढूँढा पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ। उसने नौकरानी गौरी पर संदेह किया। वसंता ने अपनी माँ को पूरी बात सुनायी तो उसने कहा "तुरंत न्यायाधिकारी से शिकायत करो। आज एक रुपये की चोरी करनेवाली नौकरानी, हो सकता है कल कीमती गहने भी चुराये।"

वसंता ने उसी समय और एक नौकर के ज़रिये न्यायाधिकारी के पास शिकायत पहुँचायी।

गौरी ने ही सचमुच उस रुपये की चोरी की थी। उस दिन तक कभी भी उसने कोई

चोरी ही नहीं की । उस रुपये से चोली का कपड़ा खरीदने वह कपड़ों की दुकान में गयी । उस दुकान में वसंता के बिना कभी भी कुछ खरीदने गौरी अकेली नहीं आयी । इसलिए दुकानदार को गौरी पर शक हुआ । उसने वसंता को ख़बर भेजी । गौरी की चोरी पकड़ी गयी ।

न्यायाधिकारी ने उस दिन शाम को वसंता को बुलवाया और कहा "एक रुपये मात्र के लिए गौरी को जेल भेजना ठीक नहीं होगा । तुम उसे नौकरी से निकाल दो तो मामला निपट जायेगा ।"

"वह रुपया मेरे लिए बहुत ही मूल्यवान है । जो पुजारी कभी मेरे पास आता ही नहीं था, मुझे यह देकर मेरा गाना सुनकर गया है ।" वसंता ने कहा ।

न्यायाधिकारी चकित होकर बोला, "अच्छा, उस बूढ़े पुजारी को सूरदास के पद सुनने की सूझी है ।" उसने नौकर को भेजकर पुजारी को बुलवाया ।

पुजारी ने बता दिया कि वह रुपया पहलवान भीम ने उसे दिया है । और कहा "इस रुपये में अवश्य ही कोई जादू-टोना होगा ।"

इस तरह बात बढ़ते-बढ़ते संपेरे नागराज तक आयी । न्यायाधिकारी गंभीर सोच में पड गया कि आखिर यह रुपया किसका होगा? तब वहाँ भद्र और एक ग़रीब किसान आये । उन दोनों ने उस दिन एक-एक रुपया खोया था । गरीब किसान रोता रहा कि मेरी मेहनत की कमाई खो गयी है ।

न्यायाधिकारी गरीब किसान को दया से देखते हुए "तुम बड़े अभागे हो । रुपया

मेरे पास है लेकिन वह तेरा खोया हुआ रुपया नहीं । वह भद्र का हैं ।" कहते हुए उसने वह रुपया भद्र को दे दिया ।

दुखी गरीब किसान ने पूछा "महाराज आपने कैसे निर्णय किया कि वह मेरा रुपया नहीं है ।"

न्यायाधिकारी हँसता हुआ "कौन है, जो इस गाँव में भद्र के बारे में नहीं जानता? वह पैसों को अपने पास बंदी बनाकर रखता है । उसके चंगुल से बचा रुपया, कैद की ज़िन्दगी से तंग आकर, आज़ादी चाहता है । इसीलिए किसी के पास स्थिर ना रहकर तरह-तरह के लोगों के हाथों से निकलता हुआ अपनी मनोच्छा पूरा कर रहा है । उस रुपये में आज़ादी से गाढ़ा लगाव है, इसलिए जिस किसी के पास भी गया, उसमें कुटिल बुद्धि जगने लग गयी । इसलिए वह रुपया भद्र का ना हो तो और किसका हो सकता हैं। किसान की कमाई मेहनत की कमाई है । ऐसी कमाई पवित्र और स्वार्थरहित होती है । उसे घर में बंदी बनाकर रखा नहीं जाता । ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए जब आवश्यकता पडती है, तभी वे उपयोग में लाये जाते हैं । इस प्रकार उसका उपयोग सही अर्थ में होता है । धनवान के घर में यही कमाई व्यर्थ होती है, क्योंकि लालच और कंजूसी के कारण आवश्यकता पड़ने पर भी इसका उपयोग किया नहीं जाता । उनका जीवन रुपयों के लिए होता है, जीने के लिए नहीं । यह रुपया भद्र का रुपया होते हुए भी निरुपयोगी है । उससे किसी का भला नहीं हो सकता, बुरा ही होता है । भद्र का खोया हुआ रुपया ही इसका प्रमाण है, बोला ।"

न्यायाधिकारी के फ़ैसले पर वहाँ जितने भी लोग मौजूद थे, हँस पडे । भद्र ने उस फ़ैसले के संदेश को अच्छी तरह समझा और वह रुपया उसने उस गरीब किसान को दे दिया । उस दिन से अपने पास जो धन है, उसे उसने बंदी बनाकर नहीं रखा बल्कि अच्छे कामों के लिए उपयोग में लाने लगा । उसकी अब गाँव में अच्छी ख्याति है ।

शरभ की सलाह-विनय की चिकित्सा

अमेती नामक गाँव में शरभ नामक एक पुरोहित था। उसकी एक बेटी थी, इसलिए अनाथ भानजे विनय को अपने यहाँ रख लिया और उसे पाला-पोसा। शरभ विनय को रोज़ अपने साथ ले जाता और पुरोहित का काम सिखाता।

एक दिन शरभ को पुराने पंचाँगों से काम पड़ा। दादा-परदाओं के समय से बाँध कर किसी कोने में सुरक्षित रखे हुए पंचाँगों को उसने निकाला।

पंचाँगों पर लगी धूल खूब साफ़ की और ग़ौर से उनकी परीक्षा करने लगा। उसमें उसे एक प्राचीन आयुर्वेद का ग्रंथ दिखायी पड़ा। प्राचीन काल में आयुर्वेद भारत में बहुत ही प्रचलित वैद्य-पद्धति थी, जिसके द्वारा बड़ी-बड़ी बीमारियों की भी चिकित्सा की जाती थी। इस आयुर्वेद-ग्रंथ के मिलने पर शरभ बहुत ही प्रसन्न हुआ। अनेकों बीमारियों के नुस्खे उसमें लिखे हुए थे। साथ ही उस में जड़ी-बूटियों से चिकित्सा की प्रणाली के भी विवरण लिखे हुए थे। शरभ ने बडी उत्सुकता से बह पुस्तक अपनी पत्नी को दिखाया।

शरभ की पत्नी बहुत ही प्रसन्न हुई और कहा "इसमें लिखी सब बातों का विश्वास तो नहीं कर सकते परंतु हाँ, भगवान बड़ा दयालू है। उनकी कृपा से और हमारे भाग्यवश हमें यह पुस्तक मिली है। कल से आप एक काम कीजिये।

"एक दो दिनों में मरनेवालों को आप पुस्तक में सूचित नुस्खे के अनुसार दवाएँ दीजिये। बड़ी-बड़ी बीमारियों की चिकित्सा करने का भार आप अपने ऊपर मत लीजिये। ऐसा करने पर आप ख़तरे में पड़ सकते हैं। जिसका नुस्खा पुस्तक में हो उसी का उपयोग कीजिये। बच गया तो आपको चिकित्सा

के लिए धन मिलेगा, मरा तो पुरोहित को दिया जानेवाला गोदान । दोनों से हमारा लाभ ही लाभ होगा । हमें किसी प्रकार का नष्ट नहीं होगा ।"

शरभ को पत्नी की सलाह अच्छी लगी । परंतु अगर अब वह वैद्य का काम प्रारंभ करेगा तो क्या लोग उसका विश्वास करेंगे? नहीं । क्योंकि आज तक उसने पुरोहित ही का काम किया है । पुरोहित से वैद्य में परिवर्तित होने से लोगों में शंका पैदा होगी, और साथ धैर्य से अपना इलाज भी नहीं करवायेंगे । इसलिए सोचा, वह यह काम अपने भानजे विनय से करवायेगा ।

विनय जल्दी ही शरभ की सलाह से छोटा-सा वैद्य बन गया । सरदर्द, पेटदर्द खुजली जैसी छोटी-छोटी बीमारियों के लिए जडी-बूटियाँ से काम निकालता था । उसका मामा पुस्तक देखकर उसे सलाह दिया करता था कि कौन-सी दवा कैसे इस्तेमाल करनी है । गाँव में मशहूर एक दूसरा वैद्य भी था इसलिए बड़े-बड़े रोगों के लिए दवा देने का साहस शरभ ने नहीं किया ।

एक दिन शरभ और विनय पडोस के गाँव में विवाह कराके लौट रहे थे । रास्ते में ग्रामाधिकारी का नौकर मिला और बोला "साहब, हमारा ग्रामाधिकारी बेहोश हो गया है । वैद्य गरुडस्वामी भी गाँव में मौजूद नहीं हैं । मालिक को देखकर गाँव के सब लोग बता रहे हैं कि वे आखिरी साँस ले रहे हैं । इसलिए मालकिन ने आपके पास मुझे भेजा है । अब तक आप ही को ढूँढ़ता रहा ।"

बात असल में जो हुई, वह यों है । ग्रामाधिकारी खाना खाकर खेत में आया । पेड पर ही पका हुआ आम नौकर ने दिया तो उसे मालिक ने खा लिया । अपनी प्यास बुझाने नारियल का पानी भी पिया । दो दिनों के पहले ही दक्षिणी खेत में नीम के पेड़ पर से शहद के छत्ते से मक्खियों को भगाकर खूब शहद पिया । जो भी खाये, बाद पान खाने की अपनी आदत के मुताबिक पान भी खाया । इसके बाद मालिक के मुँह से बात ही नहीं निकली । धड़ाम से नीचे गिरा तो औरों की मदद लेकर नौकर उन्हें घर ले आया ।

नौकर से सारी बातें जानकर शरभ घर

गया और पुस्तक के पन्ने पलटे । अब उसे मालूम हो गया कि आम, नारियल और शहद लेने के बाद तुरंत पान का सेवन किया जाए तो शरीर में विष फैल जायेगा । उस के रोकथाम का एक ही उपाय है । शिरीश पेडकी जड़, पत्ता, फूल, व कच्चे फल का चूर्ण किया जाए और उसे पिलाया जाए ।

शरभ ने विनय की सहायता से तुरंत चूर्ण तैयार किया । काम पूरा होने के बाद शरभ ने विनय से कहा " जब भगवान देता है तो छत्पर फाड़ के देता है । देखो, अब तुम्हारा समय बहुत ही बढ़िया है । मेरे साथ आओ और यह दवा ग्रामाधिकारी को देकर गाँव में अच्छा नाम कमाओ ।"

शरभ और विनय दोनों ग्रामाधिकारी के धर गये । घरभर में लोगों की भीड़ यी । उन सब कोगों को वहाँ मौजूद देखकर उन्हें डर तो लगा, पर पुस्तक में लिखे नुस्खे पर उनका पूरा विश्वास था । इसलिए वैद्य करने साहस बटोरकर वे आगे बढ़े । ग्रामाधिकारी खाट पर अचेत पडा हुआ था । विनय चूर्ण लिये उसके पास पहुँचा । वहाँ सूरदास नामक एक बूढ़ा था, जो हर किसी बात की खाल निकालता था । उसने अपना गला संभालते हुए कहा "गरुडस्वामी जैसे बडे वैद्य अब गाँव में नहीं है, इसलिए जो चिकित्सो उन्हे करनी है, वह यह छोकरा वैद्य विनय कर रहा है । शरभ भी साथ है, इसलिए जीवित हुवा तो वैद्य-धन और मरा तो गोधन । कुछ भी हो, जिसे जीवित रहना है, उसका कोई भी बाल बाँका नहीं कर सकता ।"

सूरदास की बातों पर क्रोधित होते हुए विनय ने ग्रामाधिकारी का मुँह जबरदस्ती खोला और चूर्ण अंदर डाल दिया । फिर पानी भी अंदर घोला । थोड़ी ही देर में ग्रामाधिकारी साँस लेने लगा । और कुछ ही क्षणों में वह उठकर पलंग पर बैठ गया ।

इसके बाद विनय का नाम गाँव में प्रसिद्ध हो गया । लोग उसकी प्रशंसा करने लगे कि धन्वंतरी दूसरे रूप में यहाँ आया हुआ है । ग्रामाधिकारी ने शरभ और विनय को काफी दान देकर सम्मानित किया । शरभ की पत्नी की बात सही निकली । वे अब दोनों, दोनों हाथों से कमाने लगे । पुरोहित का काम शरभ करता तो वैद्य का काम विनय ।

ग्रामाधिकारी की बीमारी और विनय की चिकित्सा की खबर ज़मींदार के दरबार के वैद्य के कानों में पड़ी । वैद्य ने तुरंत भाँप लिया कि एक अनुभव-शुन्य युवक की यह अद्भुत चिकित्सा अवश्य ही किसी अद्भुत वैद्य-ग्रंथ की उपलब्धि का परिणाम होगा ।

उसने विनय को बुलवाया और मीठी बातें करके व डरा-धमकाकर सच्चाई जान ली । उसने जो सोचा, सच निकला ।

उसने विनय से कहा "पुत्र, कोई भी विद्या तब तक नहीं फलती, जब तक वह गुरुओं से सीखी ना जाय । इस शिक्षा-प्राप्ति के लिए अथक परिश्रम करना भी आवश्यक है । तेरे पास जो ग्रंथ है वह अद्भुत ग्रंथ है । वह अनुभव की निचोड़ है, परंतु ऐसी चिकित्सा हर समय अच्छी नही होती । किसी भी समय इसका बुरा परिणाम निकल सकता है । मैं तुम्हें शास्त्रीय पद्धतियों में वैद्य-विद्या की शिक्षा दूँगा । पर केवल तुम्हें मुझे वचन देना होगा कि मुझसे विद्या सीखने के बाद ही तुम उस ग्रंथ का उपयोग करोगे ।"

आस्थान के वैदय की बातें विनय को सही लगीं । वहाँ रहते हुए उसने शिक्षा पायी और साथ ही उस अद्भुत ग्रंथ की सहायता से गाँव की जनता की सेवा करने लगा । वैद्य-संबंधी इसका ज्ञान अब परिपूर्ण है । अपने गाँव ही में ही नहीं बल्कि जगह-जगह पर उसकी ख्याति विस्तरित होती गयी ।

राम-रावण के युद्ध को देखने के लिए आये हुए देवता, यक्ष, किन्नर, किंपुरुष तथा गंधर्वों ने राम के पराक्रम व वानरों से किये गये भीषण युद्ध की भरपूर प्रशंसा की और अपने-अपने प्रदेश आनंद से लौटे ।

उसके बाद राम ने, मातलि का सम्मान किया और उसे इंद्र-रथ के साथ स्वर्ग वापस भेज दिया ।

लक्ष्मण, सुग्रीव को साथ लेकर राम अपना शिविर लौटा । उसने लक्ष्मण से कहा "लक्ष्मण, तुम तो जानते ही हो कि विभीषण ने हमारे लिये क्या नहीं किया? धर्म की संस्थापना, अन्याय का विरोध, अपने-परायों का मोह त्यागकर उसने हमारा साथ दिया है । सगे भाई के विरुद्ध भी उसने हमारे साथ रहकर लड़ाई की है । अपनों ने इसके लिए उसकी भत्सना की है, उसे दुतकारा है, पर सब सहकर अपने को स्थितप्रज्ञ रखा है । हमारे लक्ष्य में उसका योगदान महत्वपूर्ण है । अब हमें विभीषण का राज्याभिषेक करना चाहिये । इसके लिए आवश्यक प्रबंध करो ।"

लक्ष्मण ने वानरों को सुवर्ण कलश देकर समुद्रजल मंगाया । स्वयं विभीषण को ले गया और सिंहासन पर आसीन करवाकर समुद्र-जल से उसका अभिषेक किया । विभीषण के मंत्री तथा उसे चाहनेवाले राक्षसों ने आनंद से जयजयकार किया । इस समय विभीषण ने प्रतिज्ञा की कि अपने

को लंका ले चला। उसकी सुँदरता पर रीझकर उसने उसे अपनी पत्नी बनाना चाहा। यह उसकी नीचता की पराकाष्ठा थी। उसके पतन का आरंभ था। मेरी चेतावनी का उसपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा और आप लोग जानते ही है कि उसने अपने पैरों पर खुद कुल्हाडी कैसे मार ली।" कृतज्ञ विभीषण ने राम लक्ष्मण की सेवा में अनेक दिव्य पुरस्कार समर्पित किये। यदयपि कृतज्ञ विभीषण ने उन्हें अनेकों दिव्य पुरस्कार दिये, और राम लक्ष्मण ने उन्हें मंद मुस्कान से स्वीकार भी कर लिया, परंतु उन पुरस्कारों से उनका कोई मोह नहीं था। उन्होंने उन्हें केवल विभीषण की तृप्ति के लिए स्वीकारा।

महापर्वत की तरह गंभीर मुद्रा में पासही खड़े हनुमान को देखकर राम बोला "राक्षस राजा विभीषण की अनुमति लेकर तुम लंका नगर जाओ और सीता को नमस्कार करके निवेदन करो कि मेरे हाथों रावण की मृत्यु हो गयी है और कहो, मैं लक्ष्मण-सुग्रीव के साथ यहाँ हूँ। यह शुभ समाचार उसे सुनाकर उसकी भी बातें जानकर यहाँ वापस लौटो।"

मार्ग में राक्षसों का आदर-सत्कार पाते हुए हनुमान लंका नगर पहुँचा।

वह रावण के मंदिर के प्रांगण में गया और देखा कि एक पेड़ के नीचे राक्षस स्त्रीधों-के बीच सीता चिंतित बैठी हुई है।

वहाँ पहुँचकर उसने अपना नाम बताया,

शासन-काल में वह राक्षसों का भय दूर करेगा और अब से लंका नगर सुख-शांति से सुशोभित रहेगा। नागरिक राक्षसों ने उसे मूल्यवान पुरस्कार समर्पित किये। विभीषण ने राक्षसों को सबिस्तार बताया कि उसने अपने भाई रावण का विरोध क्यों किया और राम का साथ क्यों दिया। उसने बताया "रावण अधर्म के मार्ग पर चल रहा था। दर्प, काम, वासना के गर्त में वह गिरा जा रहा था। उसे उनसे उबारने के उसके सारे प्रयत्न व्यर्थ हो गये। उसके हृदय में बहन शुर्पणखा के अपमान की ज्वाला जल रही थी, लेकिन वह यह सच्चाई भूल गया कि दोष उसकी बहन की थी, राम और लक्ष्मण की नहीं। वह सती साध्वी सीता

नमस्कार किया और हाथ बाँधे खडा हो गया । सीता ने पहले उसे पहचाना नहीं, परंतु याद आने पर उसे अपार हर्ष हुआ । उसमें जो परिवर्तन हुआ, उसे देखकर हनुमान ने राम की बातें यों दुहरायीं "सीतादेवी, राम सकुशल हैं । विभीषण और वानर सेना के बीच हैं । उन्होंने आपसे कहने के लिए कहा कि उन्होंने शत्रु का वध कर दिया है, और अपने लक्ष्य की प्राप्ति की है । वे सकुशल हैं । रावण को मारने में राम को, विभीषण की सहायता, वानर वीरों का पराक्रम और लक्ष्मण की निस्वार्थ सेवाएँ प्राप्त हुई हैं । राम ने आपकी सुख-शांति की इच्छा प्रकट करते हुए आपसे कहा है "तुम्हें यह शुभ समाचार सुनाकर तुम्हें प्रसन्न कर रहा हूँ । पातिव्रत्य धर्म का आचरण करने वाली तुम अब जीवित हो और यह मेरा अहोभाग्य है । यह विजय मेरे पराक्रम से मेरे हाथ आयी है, इसलिए अब तुम निश्चिंत रहो, दुख छोडो । रावण मर गया और लंकानगर अब हमारें अधीन में है । मैंने दृढ संकल्प लेकर समुद्र पर पुल बांधा है और रावण का वध करने की अपनी शपथ पूर्ण की है । लंका अभी विभीषण के अधीन है । तुम रावण के घर में हो, इस के लिए तुम्हें चिंतित होने की कोई आवश्यकता नहीं । वंह अब तुम्हारा ही धर है । तुम्हें देखने शीघ्र ही विभीषण आनेवाला है ।"

ये बातें सुनकर सीता अति आनंदित होकर

उठ खडी हो गयी, पर वह कुछ कह न सकी । कुछ सोचती हुई मौन रह गयी ।

हनुमान ने यह देखकर पुछा "देवी, आप क्या सोच रही हैं? मैने जो कहा, उसक आपने कोई उत्तर नही दिया? ऐसा क्यों?"

काँपते स्वर मे सीता ने " आज मेरी प्रसन्नता का कोई छोर नहीं । जिस पति का दर्शन करने के लिए मैं इतने सालों से लालायित हूँ, उस पति का शीघ्र ही दर्शन करनेवाली हूँ । मुझे तो पूरा विश्वास था कि पराक्रमी, दिग्विजयी राम अवश्य ही मेरा उद्धार करेंगे । उस राक्षस रावण का संहार करेंगे और विजय प्राप्त करेंगे । आज तुमने उस विजय का समाचार सुनाकर मुझे हर्षित कर दिया । अपने पति की विजय का

समाचार तुमसे सुनकर मेरे मुँह से कोई बात निकल नहीं पा रही है क्योंकि मैं अति प्रसन्न हूँ। ऐसे प्रिय समाचार लाने पर मैं तेरा कैसे और किन शब्दों में अभिनंदन करूँ, बहुत-कुछ सोचने के बाद भी शब्द नहीं मिल रहे हैं। मैं तुम्हें पुरस्कार देना भी चाहूँ तो भी वह पुरस्कार तीनों लोकों में उपलब्ध नहीं होगा" कहा।

हनुमान ने नमस्कार करते हुए "ऐसी बातें तो कोई और कर भी नहीं सकते। अपने पति की विजय के इच्छुक आप ही कह सकती हैं। आपकी ये बातें ही मेरे लिए अति उत्तम पुरस्कार हैं। रावण का वध करनेवाले राम को देखते हुए मुझे इतना आनंद हुआ मानों मुझे इंद्र की पदवी मिल गयी हो।" कहा।

सीता ने भी हनुमान की प्रशंसा की। तब हनुमान ने सीता से कहा 'आप मानें तो बड़ी निर्दयता से आपसे व्यवहार करनेवाली इन राक्षस स्त्रीयों को मार डालना चाहता हूँ"।

जितना सोचता, उतना ही क्रोध उन राक्षस स्त्रीयों पर हनामान का तीव्रतर होता जा रहा था।

सीता ने उसका मनोभाव जाना और कहा "ये राक्षस स्त्रीयाँ रावण की दासियाँ हैं। रावण की सेवा करके अपनी जीविकाएँ चलाती हैं। उन्हें तो राजा की आज्ञा का पालन तो करना ही है। ऐसा ना करने पर उन्हें कठोर दंड भुगतना पड़ेगा। इसलिए उनपर क्रोधित होना अनुचित है। अपने दुर्भाग्य से अथवा पुराने जन्म में मुझसे किये गये पापों से मुझे ये दुख झेलने पड़े हैं। मुझे तो इन स्त्रीयों पर कोई क्रोध नहीं। राक्षस रावण मर गया है, अब ये मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकती। हो सकता है, राक्षसोंने कुटिल बुद्धि से मुझे कष्ट पहुँचाया हो, पर इनको दंड देना उचित नहीं होगा।"

हनुमान ने सीता के वचनों की प्रशंसा की "आप सब प्रकार से राम की योग्य पत्नी हैं। आपका हृदय प्रेम, ममता, दया आदि उत्तम गुणों का घर है। यही कारण है, आप में सब को क्षमा करने की क्षमता है। स्त्री-जाति के लिए आपा आदर्श हैं। भूत वर्तमान या भविष्य में आप जैसी स्त्री कभी ना हुई और ना होंगी। कहिये, उन्हें क्या

बताना है । और मुझे भेजिये" कहा ।

"मैं अपने पति राम का दर्शन करना चाहती हूँ" सीता ने कहा । वह संदेश लेकर हनुमान बडी तेज़ी से राम के पास पहुँचा । राम से हनुमान ने कहा "जिसके लिए सेतु बाँधकर इतना बडा युद्ध किया है, उस सीता के दर्शन हुए । उन्होंने मुझे पहचाना है । हमारी विजय पर उन्हें अपार हर्ष हुआ है । उन्होंने कहा है कि रावणासुर को मारनेवाले राम-लक्ष्मण को देखता चाहती हूँ ।"

यह सुनकर राम की आँखों मे आँसू भर आये । थोड़ी देर मौन रहकर बोला "इतने लंबे काल तक रावण के घर रहती हुई सीता को स्वीकार करने पर समाज मुझे कोसेगा, यह मैं जानता हूँ । निर्दोष सीता का त्याग करने के पाप से मैं घिर जाउँगा । क्या करुँ?"

गरम साँस भरते हुए पास ही खड़े विभीषण से राम ने कहा" तुम जाओ और सीता से कहो कि वह सुगंधित जल से अभ्यंगस्नान करे, शरीर शुद्ध करे और सुँदर आभूषणों से अलंकृत होकर यहाँ आये ।"

विभीषण शीघ्र ही लंकानगर गया और अंत:पुर की स्त्रीयों द्वारा सीता को समाचार भेजा । उसने स्त्रीयों को यह भी बताया कि वे सीता का पवित्र स्नान कराके, उसे अलंकृत करके ले आयें । कहें कि तुम्हारा पति तुमसे मिलना चाहता है ।

सीता ने कहलवाया कि वह जैसे है, बैसे ही उनका दर्शन करना चाहती है । विभीषण

ने स्पष्ट किया कि राम जैसा चाहता है, वै ही करे । सीता ने 'हाँ' कर दिया ।

विभीषण ने सीता का शुभ्र स्नान करवाय शरीर में सुगंधियाँ पोतवायीं, दिव्य आभूष से अलंकृत करवाया, भव्य वस्त्र पहनवा और कुछ राक्षसों को उसके साथ राम पास भेजा । स्वयं भी गया ।

विभीषण ने राम से कहा "आप आज्ञानुसार सीता को ले आया हूँ ।" उन आगमन की बात जानकर भी राम चिंति ही बैठा रहा । एक ही समय में तीन प्रका की पीडाएँ उस पीडित करने लगी ।

एक तरफ इतनी लंबी अवधि के बा सीता के लौटने पर आनंद, दूसरी तरफ ती चिंता कि उसे कैसे त्यागुँ, और इसप

अभिमान कि अब तक जो राक्षस के घर में रह चुकी है, उसे कैसे अपनाऊं?

सोचकर राम ने विभीषण से कहा "सीता को मेरे सामने ले आओ ।"

विभीषण ने वहाँ उपस्थित वानर और राक्षसों को वहाँ से हटवा देना चाहा । राम ने उनको हटाता हुआ देखकर उसे रोका और कहा "ये कोई पराये नहीं हैं । क्यों जानवरों की तरह इन्हें यहाँ से भगा रहे हो? सीता को ये लोग भी देखें, तो इसमें बुराई क्या है?"

विभीषण पश्चात्ताप-भाव से सीता को वहाँ ले आया ।

लक्ष्मण और सुग्रीव को राम की बातें सुनकर लगा कि राम के हृदय में सीता के लिए स्थान नहीं है । इसपर उन्हें बड़ा दुख हुआ । राम की स्थिति देखकर वे भयभीत हो गये ।

सीता लज्जा से सिकुडती हुई विभीषण के साथ राम के सामने आयी । बहुत लोग उस स्थान पर उपस्थित थे, इसलिए लज्जा से अपने आँचल से अपने को छिपाती हुई "आर्यपुत्र" कहकर रोने लगी । उसी समय उसे इस बात का आनंद भी था कि इतने दीर्घ काल के बाद वह अपने पति को देख पा रही है । उसका दुख शनैः शनैः घटने लगा ।

सीता को देखते ही राम पहले, क्रोधित हुआ । उसने कहा "सीता, युद्ध मे शत्रु का नाश करके मैने अपने पौरुष को प्रमाणित किया है । शत्रु के गर्व को चूर-चूर किया है और अपने अपमान का मैने प्रतिशोध लिया है । मेरा प्रयत्न सफल हुआ है । अपनी शपथ से मुझे मुक्ति प्राप्त हो गयी है । तुम्हें ले जाकर रावण ने मेरा अपमान किया है । मैंने उसके परिवार सहित उसका संहार करके अपना आपमान धो डाला है । हनुमान ने समुद्र लाँघा, लंका का दहन किया, अलावा इसके, उसके अनेक बडे-बडे कार्य सफल हुए । सुग्रीव को भी, युद्ध में मेरा साथ देकर सफलता मिली है । विभीषण का परिश्रम भी सफल हुआ है, जिसने मेरा ही भरोसा करके मुझे संपूर्ण सहयोग दिया ।

सीता ने जब देखा कि राम ने एक भी वाक्य उसके बारे में नहीं कहा तो उसके

दुख का आर-पार नहीं रहा। जितना वह दुखी होने लगी, राम उतना ही क्रोधित हो रहा था। क्रोधित राम ने कहा "सीता, अपमान का शिकार मैं, जितना हो सकता था, किया। पर जान लो, यह सब मैंने तुम्हारे लिए नहीं किया है। सदाचार की रीति के अनुसार तुममें और मुझमें बड़ा वैरुध्य है इसलिए तुम जहाँ जाना चाहो, जा सकती हो, इसकी मैं तुम्हें अनुमति देता हूँ। मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं है। जो स्त्री किसी पराये के घर में रह चुकी है, उसे कोई पराक्रमी व अभिमानी कैसे स्वीकार कर सकता है? तुम रावण के घर से आयी हुई हो। अपने सौंदर्य से तुमने रावण की आँखों को आनंदित और उल्लसित किया है। मेरा जन्म उत्तम वंश में हुआ है, तुम जैसी को स्वीकार करके अपने वंश को मैं कैसे कलंकित करूँ? मुझमें तुमपर किसी प्रकार का मोह नहीं। तुम अपने इच्छानुसार जहाँ जाना चाहो, जाओ। मैंने अच्छी तरह सोच-विचारके ही यह निर्णय लिया है। हाँ, अपनी जीवका के लिए तुम लक्ष्मण के साथ रहना चाहो तो रहो। नहीं तो भरत के पास चली जाना। सुग्रीव या विभीषण के यहाँ रहो। तुम जहाँ रहकर सुखी रह सकती हो, वहाँ रहो। शत्रुओं का सफल संहार करके, तुम्हारी उनसे रक्षा करके, मैंने अपना क्षत्रिय धर्म निभाया है। बस, मेरा कार्य हो गया। मैं तुम्हें अपने यहाँ आश्रय नहीं दे सकता।"

सीता के लिए ये बातें कर्ण-कठोर थीं। वह हताश हो गयी। कोई भी ऐसे कटु बचन अपने मुँह से नहीं निकालता। राम के मुँह से यह सुनकर वह चकित स्तब्ध रह गयी।

इतने दीर्घ काल तक वह यातनाएँ सहती रही परंतु सोचा, मिलते ही पति के मुँह से उन मधुर वचनों को सुनकर अपनी यातानएँ भुलो देगी। तलवार से कटी लता की तरह एक क्षण भर के लिए वह काँप उठी। उसकी आँखों से आँसुओं की वर्षा होने लगी। (सशेष)

प्रवेश मुफ्त

हेलापुरी में विश्वेश्वर की नाटक कला समिति बहुत ही प्रख्यात व प्रसिद्ध है । लेकिन धीरे-धीरे लोगों का पैसे देकर नाटक देखना कम हो गया । इस स्थिति में विश्वेश्वर ने 'पारिजात पहरण' नामक नाटक की रचना की । उसके प्रदर्शन के लिए होनेवाले खर्च के बारे में उसने अपने दोस्त सुदर्शन से चर्चा की ।

सुदर्शन ने प्रदर्शन केलिए होनेवाले खर्च के लिए थोडी सी रकम देकर कहा "आनेवाले शुक्रवार की रात को नाटक के प्रदर्शन का आवश्यक प्रबंध करो ।"

इस बीच सुदर्शन ने प्रचार करवाया कि 'परिजात पहरण' नाटक का प्रदर्शन शुक्रवार को होनेवाला है और प्रवेश मुफ्त है ।

नाटक के दिन प्रदर्शन-मंडप लोगों से खचाखच भरा हुआ था । नाटक खतम होने पर लोग उसकी वाहवाही करते हुए जब बाहर जाने लगे तब द्वार पर सुदर्शन के आदमियों ने उन्हें रोका और उन्हे शुल्क चुकाने पर मजबूर किया ।

दर्शकों ने कहा "यह तो सरासर अन्याय है । आप लोगों ने घोषण क्यों की प्रवेश मुफ्त है ।"

"हाँ मुफ्त तो प्रवेश मात्र ही है । पर निष्क्रमण के लिए शुल्क चुकाना होगा" सुदर्शन के आदमी बोले ।

दर्शक कर क्या सकते थे? उन्हें सुदर्शन के आदमियों को रकम चुकानी ही पडी ।

—कोने नागवेंकरट आँजनेयुलु
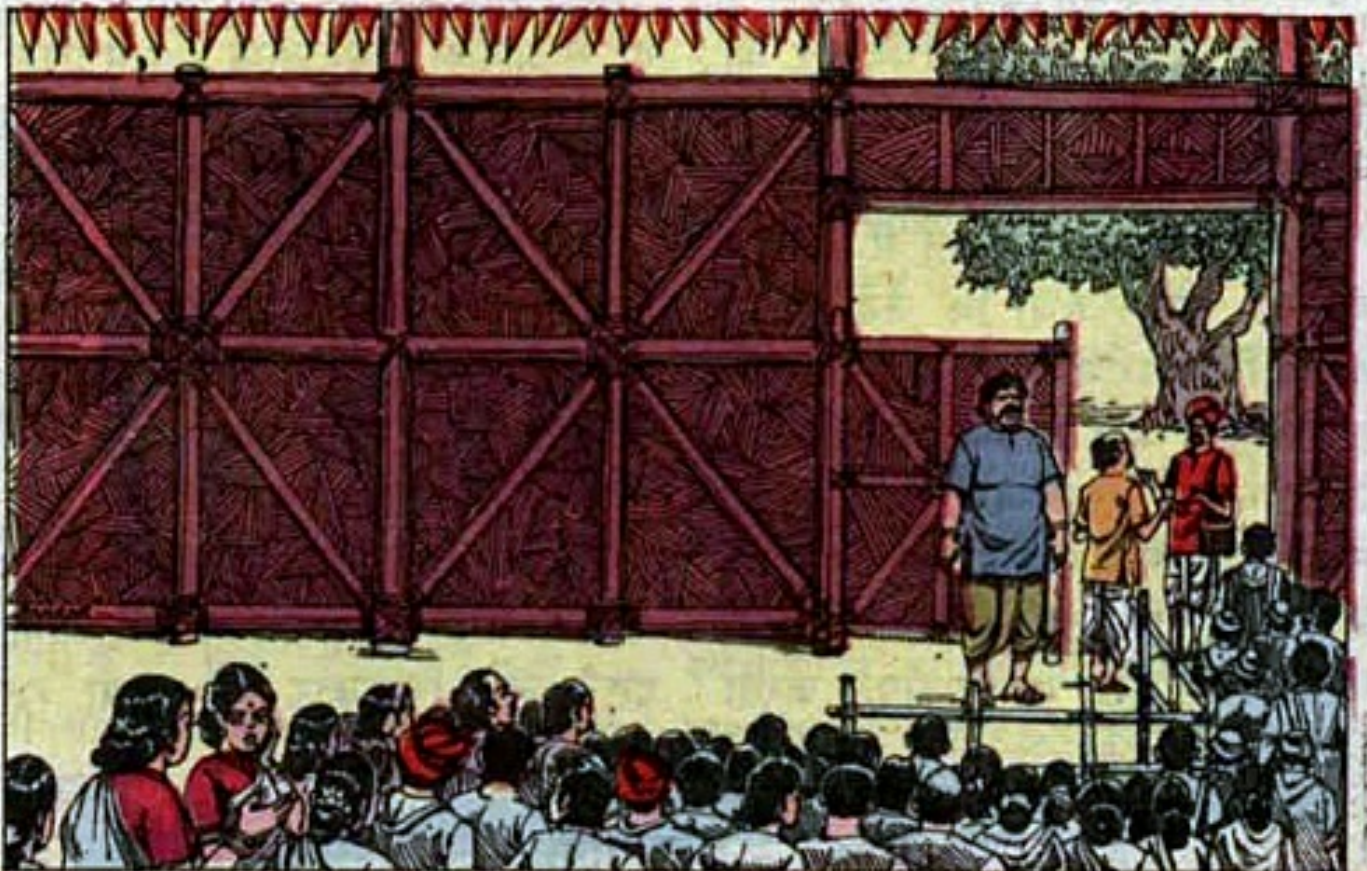
मायाचित्र

बहुत ज़माने के पहले राजस्थान में जयसिंह नामक एक राजा था। उसे चित्रलेखन का बडा शौक व लगाव था। उसके दरवार में एक बडा चित्रकार रहा करता था। उस चित्रकार से जयसिंह अपना चित्र खिंचवाने की बडी तीव्र इच्छा रखता था, लेकिन अचानक वह चित्रकार मर गया। उस दिन से दरबार में उस चित्रकार की जगह खाली ही रही।

इन दिनों हिमालय प्राँत से हेमचंद्र नामक एक गरीब चित्रकार राजस्थान में आया। हेमचंद्र को मालूम हुआ कि जयसिंह के दरवार का चित्रकार मर चुका है और उसकी जगह पर किसी और चित्रकार को नियुक्त किया नहीं गया है। इस आशा से कि शायद वह नौकरी उसे मिल जायेगी, वह अपने गधे पर बैठकर, तीन दिन तक रेगिस्तान में बिना कुछ खाये-पिये भूखा रहकर सफर करता रहा और आखिर जयसिंह के किले में पहुँचा।

सैनिकों ने पहले हेमचंद्र को राजप्रासाद में जाने नहीं दिया। जब उसने कहा "मैं चित्रकार हूँ, राजा को दिखाने के लिए चित्र ले आपा हूँ" तो उसे अंदर जाने दिया।

हेमचंद्र ने राजा के दर्शन किये और कहा "बिना निद्राहार के सफर करके बहुत ही दूर से आपको देखने आया हूँ। ये चित्र मैंने खींचे हैं। उन्हें देखने पर आप ही जान जायेंगे कि मै इस कला में कितना निपुण हूँ।"

उन चित्रों को देखकर राजा बहुत खुश हुआ। प्राकृतिक दृश्य बडे ही आकर्षक ढंग से चित्रित किये गये थे। चित्रांकन में सजीवता थी। कुछ राजा और रानियों के चित्रों का इतना श्रेष्ठ चित्रण हुआ, लगता था मानों, वे हमारे सम्मुख ही हों। राजा जयसिंह की समझ में नहीं आया कि इतने बडे चित्रकार को भूखा रहकर

दूर देश से यहाँ आने की क्या जरूरत आ पडी है ।

"ये चित्र मुझे बहुत अच्छे लगे हैं । बोलो, इनके लिये कितना मुल्य चुकाना होगा", हेमचंद्र से जयसिंह ने पूछा ।

'भूखा हूँ । पहले मुझे भोजन खिलाइये । मैने सुना है कि आपके दरबार में चित्रकार का एक स्थान खाली है । मुझे उसपर असीन होने दीजिये । वही मेरे लिए सब कुछ है" हेमंचद्र ने जवाव दिया ।

राजा ने उसकी मांग स्वीकार की और अपने सैनिकों को बुलाकर आज्ञा दी कि हेमचंद्र भोजनशाला में ले जाया जाए । उसका गधा राजा के अस्तवल में बाँध दिया गया । दूसरे दिन से हेमचंद्र दरबार में चित्रकार के आसन पर बैठने लगा ।

चूँकि अब दरबार में चित्रकार नियुक्त हो गया तो राजा ने सोचा कि अव अपना चित्र खिंचवा लूँ । उसने हेमचंद्र से कहा "दरबार में हमारे सारे पुरखों की तरवीरें हैं । अब मेरी भी तस्तीर खींचो, जिससे मेरी आनेवाली पीढ़ियां मेरा रूप देख सकें ।"

"केवल आप ही की तस्वीर क्यों महाराज, आपके साथ सिंहासन पर रानी को बिठाऊँगा और आप के मंत्री, सेनापतियों को भी मिलाकर सब की तस्वीर बनाऊँगा । दरबार में एक अच्छी-सी दीवार दिखाइये । वाकी सारा काम मैं कर लूँगा" हेमचंद्र ने कहा ।

राजा बहुत ही आनंदित हुआ । उसने पूरी राजसभा को चित्रांकित करने की

अनुमति दे दी ।

राजा के दरबार में बहुत बडे-बडे पेटवाले हैं । एक कुबडा भी है । एक आँख का है, तिरछी नज़र के हैं । वे सब एक-एक करके हेमचंद्र के पास आये और बोले "मेरा चित्रांकन करते समय ध्यान रखना, कुबडी ना रहे, चित्र ऐसा बनाओ मानों मेरी दोनों आँखें हों, मेरी आँख सीधी हो" यों उन्होने उसे सावधान किया । उन्होने धमकी भी दी कि ऐसा नहीं हुआ तो पिटाये जाओगे या मारे जाओगे । इस प्रकार हेमचंद्र को उन लोगों ने डरा दिया । मनुष्य के इस स्वभाव पर हेमचंद्र को बहुत ही आश्चर्य हुआ कि वह अपना रूप जैसा है, वैसा देखने से क्यों डरता है । स्वाभाविकता से हटकर

कृत्रिमता की शरण में वह क्यों जाता है? लेकिन वह करे क्या? सब की आज्ञओं का पालन उसे करना ही पडेगा । नहीं तो मालूम नहीं, परिणाम क्या होगा?

इसकी खबर राजा के कानों में भी पडी । उन्होने हेमचंद्र को बुलाकर "दरबार में जो भी हैं, उनका यथावत् चित्रण करो । अगर तुमने उसमें से कोई हेरफेर किया तो तुम्हे फाँसी पर चढ़ा दूँगा । मेरी बात सदा याद रहे" सावधान किया । हेमचंद्र को हर तरह से ख़तरा दीखने लगा । वह कुछ भी करे कैसे भी करे, उसे लग रहा था, मौत टाली नहीं जा सकती । उसने खूब सोचा-विचारा और एक निर्णय पर पहुँचा ।

चित्रांकन के लिए एक दीवार का प्रबंध किया गया । उसे एक परदे से छिपाया गया । उसने अपनी मदद के लिए तीन आदमियों की सहायता ली । उन्हीं के साथ खाते-पीते हुए हेमंचद्र आनंद से दिन गुज़ारने लगा ।

एक महीना हुआ । राजा ने हेमंचद्र को बुलाकर पूछा "चित्र कहाँ तक बन चुका है?" "महाराज, काम पर लगा हुआ हूँ । शीघ्र ही समाप्त होगा" हेमचंद्र ने जवाब दिया ।

इसके बाद राजा हर सप्ताह हेमचंद्र से पूछा करता कि काम कहाँ तक समाप्त हुआ है तो हेमचंद्र कहता कि शीघ्र ही समाप्त होगा, अब थोडा ही काम बाक़ी है ।

इस तरह तीन महीने गुज़र गये । तब भी चित्र जब पूरा नहीं हुआ तो राजा आगबबूला हो गये । "एक हफ्ते के अंदर चित्र अगर ख़तम ना हो तो तुम्हें कठोर दंड दूँगा" राजा ने कहा

हेमचंद्र ने जवाब दिया "चित्र पूरा हो चुका है महारज । कल का दिन अच्छा दिन है । परिवार सहित पधारेंगे तो चित्र का आविष्करण भी कर सकते हैं ।" राजा बहुत ही प्रसन्न हुआ और उसने यह बात सभी सभासदों को सुनायी ।

दूसरे दिन राजा, रानी तथा अन्य राजकर्मचारी चित्र देखने आये । दीवार पर अब भी परदा लटक रहा था ।

जो लोग चित्र देखने आये उनसे हेमचंद्र ने कहा "आप सबों का चित्रांकन किया है । अपनी-अपनी तस्वीर को सावधानी से खूब पहचानिये । पर उससे पहले आपसे एक

निवेदन करना चाहता हूँ । आपमें से जिसने उत्तम जन्म लिया है, उसी को मेरा यह चित्र दिखायी पडेगा । जिसका जन्म उत्तम नहीं है, उन्हें कुछ दिखायी नहीं पडेगा" कहते हुए उसने परदा हटा दिया ।

दीवार पर कोई तस्वीर नहीं थी । राजा से लेकर वहाँ उपस्थित कोई भी यह सच्चाई बताने से पीछे हट रहा था । हर कोई इस भ्रम में था कि मुझे छोडकर हर दूसरा अपना चित्र देख पा रहा है । हर दरबारी समझ रहा था कि मेरा जन्म उत्तम जन्म नहीं है । यही कारण होगा कि मैं अपना चित्र दीवार पर देख नहीं पा रहा हूँ । वह अपने अभागे जीवन पर अपने आपको कोस रहा था ।

सिर्फ राजा के साथ रहनेवाले हास्यकार ने बोल दिया "मालूम नहीं, मेरा कितना बुरा और खोटा जन्म है । मुझे तो सिर्फ दीवार ही दिख रही है ।"

अब यह साबित हो गया कि हेमचंद्र सबकी आँखों में धूल झोंकना चाहता था । क्रोधित राजा बोले "अरे नीच. तुमने इतने लोगों को धोखा दिया? तुम्हें फाँसी पर चढ़ाने से भी कोई पाप नही ।"

हेमचंद्र ने हाथ जोडे "हाँ महाराज, मुझे फाँसी पर चढ़ाइये । मैने सपने में भी नही सोचा था कि मेरी जान सुरक्षित होगी । लेकिन एक प्रार्थना है, कृपया सोने की रस्सी से मुझे फाँसी पर मत लटकाइये । क्योंकि मुझपर लक्ष्मी की बिलकुल कृपा नहीं है । मुझे फाँसी पर लटकाते समय हो सकता है, सोने की रस्सी आपही आप टुकडों में टूट जाए" बडे विनय से हेमचंद्र ने कहा ।

यह बात सुनते ही उस क्रोध में भी राजा हँस पडे । उन्हें मालूम हो गया कि हेमचंद्र चाहे कितना भी बडा कलाकार हो, राजाओं के दरबार में रहने की योग्यता नहीं रखता । राजदरबार में रहने के लिए होशियारी और चालाकी चाहिये । सब के क्रोध से अपने को बचाते हुए सबको प्रसन्न रखने की काबिलियत चाहिये । इन के अभाव के कारण इस दुनियादारी से वह अनभिज्ञ है । इसलिए हेमचंद्र को उसने कुछ सोना दिया और वह अपने गधे पर बैठकर वहाँ से चलता बना ।

शुक्रगह में जल

अमरीका के 'नास अम्स रिसर्च सेंटर' ने आकाश में 'पयनीर १२' नामक साटलैट भेजा है, जिसने शुक्रग्रह के बारे में अनेकों विषयों का समीकरण किया है। यह साटलैट पिछले अक्तोबर में छिन्नाभिन्न हो गया। उस साटलैट के भेजे हुए समाचार को पढ़ने पर मालूम होता है कि क़रीब लाख करोड साल पहले शुक्रग्रह में महासमुद्रों के लिए जितना पानी चाहिये उतना पानी वहाँ था। इस कारण शास्त्रज्ञों की राय है कि वहाँ उस काल में जीव राशियों की होने की संभावना है।

आँखों पर टी. वी

घर में सामान्यतया टी. वी होता ही है। हाल ही में हम देख भी रहे हैं कि जहाँ हम जाते हैं, वहाँ लेजाने के लिए पोर्टबुल टी वी भी अधिकाधिक उपयोग में लाये जा रहे है। ये बाटरी की शक्ति से काम करते हैं। मोटर कारों में भी लघु टी. वी. फिट किये जा रहे हैं। अब हंगेरी के दो इंजनीयरों ने एक ऐसे टी. वी. का आविष्कार किया है, जो आंख के चश्मे के फ्रेम में समा सकें। दोनों आइनों की सहायता से 'लेन्स' के अंदर की तस्वीरें देखी जा सकती हैं।

इन्स्टेंट फोटोग्राफ

अखबारों के प्रतिनिधि बनकर जानेवाले फोटोग्राफर को फोटो खीचकर उसे 'डेवलप' करके भेजने का कष्ट अब उठाना नहीं पडेगा। कितनी भी दूरी पर हों, फोटो खींचने के बाद फौरन अखबारों के दफ्तरों में भेजने का अदभुत सुगम उपाय अब उपलब्ध है। 'साटलैट'-सांकेतिक विज्ञान द्वारा यह संभव होता है। केमेरे के पीछे लगा हुआ जो 'एलक्ट्रानिक' परिकरण है, उसका रेडियो टेलिफोन से और वहाँ से फिर 'सटिलैट' का संबंध जुडा हुआ होता है। इस प्रबंध के जरिये केमेरे की तस्तीर को 'साटिलैट' के द्वारा 'सेंट्रल कम्प्युटर' को भेबा जाता है। 'सेंट्रल कम्प्यूटर' उस तस्वीर को रिसीवं करके, जहाँ भेजना है, वहाँ क्षण में भेज देता है।
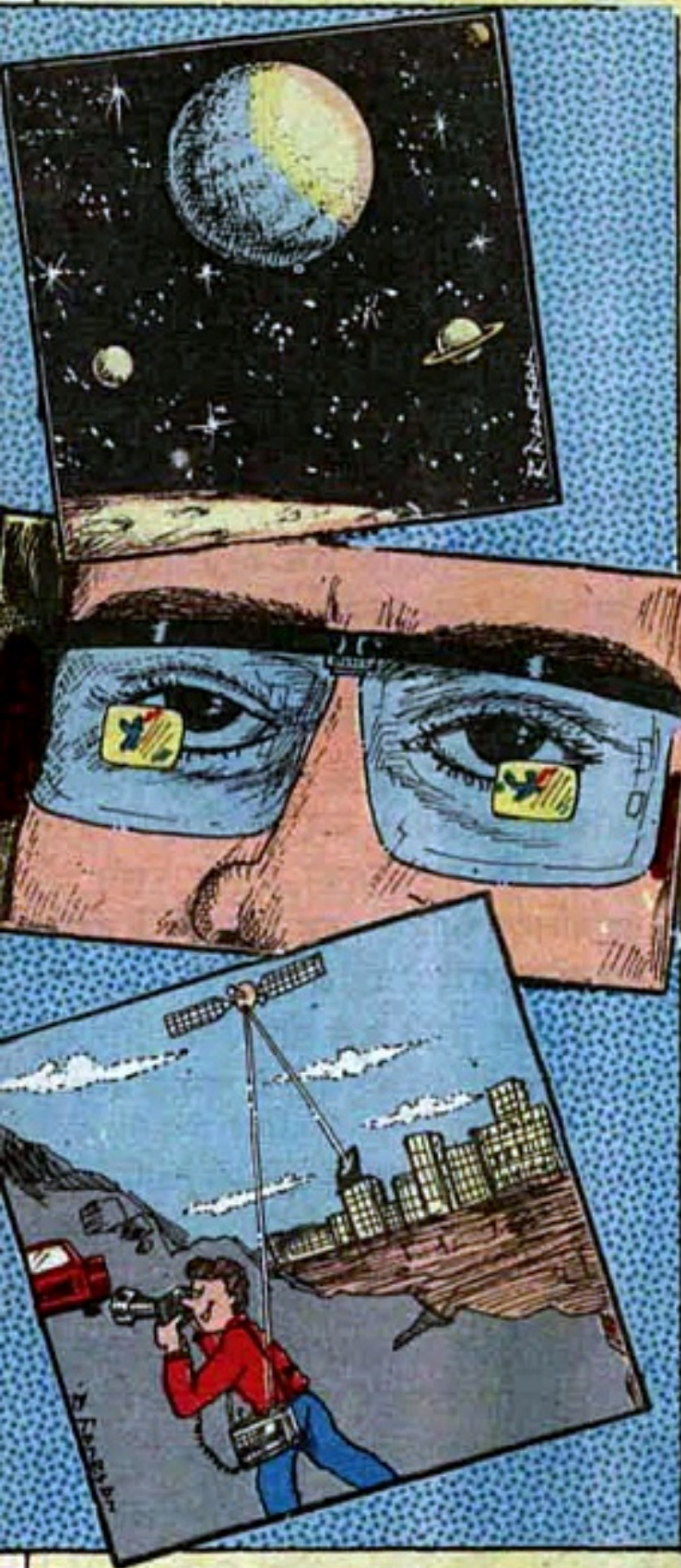
न्याय-सूत्र

कुछ हज़ारों साल पहले धर्मपाल नामक राजा धवलगिरि राज्य पर शासन करता था । दान-धर्मों में उसकी बराबरी का कोई नहीं था । न्याय-निर्णय के समय धर्मपाल अपने-पराये का कोई भेद ही नहीं रखता था ।

वह जिस न्याय-सूत्र का आचरण करता था, वह था- आँखके लिए आँख और दाँत के लिए दाँत । किसी की अगर किसी दूसरे से हानि पहुँची हो तो जिसने हानि पहुँचायी, उससे बदला लेने का न्याय और अधिकार उस राज्य में प्रचलित था । न्याय-सूत्रों का पालन वह बडी कड़ाई से करता था । राजा से लेकर रंक तक एक ही प्रकार के न्याय-सूत्रों का पालन होता था । इस कारण से राज्य में अन्याय और अत्याचार होते ही नहीं थे । अपराधी इन न्याय-सूत्रो के कारण अपराध करने से नितांत डरते थे । अपने न्याय-सूत्रों के बलपर वह राज्य को सही मार्ग पर चला रहा था । दूसरे राजाओं के लिए भी वह आदर्श राजा बन गया ।

एक दिन धर्मपाल भरी सभा में बैठा हुआ था । मंत्री, सेनापति, सभासद अपने–अपने आसनों पर सामने आसीन थे । राज्य-पालन के संबंध में गंभीर चर्चा चल रही थी । उस समय एक काला नाग रास्ता भूलकर, भटककर दरबार में आया ।

काले नाग को दरबार में देखते ही शोरगुल मच गया । कुछ लोग तलवारें खींचकर उसे मारने सन्नद्ध हो गये । लेकिन पिता के बग़ल में बैठे राजकुमार ने सबको रोक लिया और अपनी तलवार से उसके दो टुकडे कर दिये । ऐसा कटकर भी जिस धड पर सिर था, उसे लेकर काला नाग किसी तरह अपने को बचाकर बडी मुश्किल से अपने बिल में जा घुसा ।

-सुरेश-

नाग की पत्नी नागिन अपने पति पर आयी विपदा को देखकर विलाप करने लगी । तब नाग ने पत्नी को बताया कि रास्ता भूलकर वह कैसे राजा के दरबार में गया और राजकुमार ने उसकी क्या गति कर दी । उसने पत्नी से कहा "तुम तो उस राज्य के नियम जानती हो । उन नियमों के अनुसार राजा न्याय-अन्याय की सुनवाई करेंगे और अपने पुत्र को दंड देंगे । उस नियम की वजह से अपराधी राजकुमार को तुम डसकर मार सकती हो । मुझे पूरा विश्वास है कि राजा अपने पुत्र को दंड देने से बिलकुल हिचकेंगे नहीं । हाँ, याद रखता, डसने के पहले राजा को न्याय की सुनवाई करने का तुम्हें मौका देना दोगा । जल्दबाजी में तुम कहीं राजकुमार को किसी प्रकार की हानि मत पहुँचाना ।" कहकर नाग मर गया ।

नागिन उस रात को राजा के किले में पहुँची और राजकुमार के सोने के कमरे में गयी । गहरी नींद में सोये हुए राजकुमार के गले से वह धिर गयी । राजकुमार जागा । वह भय से काँप रहा था और अपनी सहायता के लिए ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा । उसकी चिल्लाहट सुनकर दास-दासियाँ दौडे-दौडे आये । लेकिन किसी को मालूम नहीं था कि नागिन को कैसे मारा जाए? राजकुमार के गले को घेरे हुए साँप को मारना हो तो राजकुमार भी घायल होगा । उस स्थिति में वे घबरा गये और वे असमंजस में पड गये । इतने में नागिन ने मानव-भाषा में बताया "पहले राजा को बुला लाइये । फौरन न्याय की सुनवाई होनी चाहिये । अगर तुममें से किसीने मुझे मारने की कोशिश की तो राजकुमार को डस लूँगी । सावधान ।"

इतने में राजा वहाँ आ पहुँचे । नागिन ने अपने पति की मौत का विवरण देते हुए कहा "मेरे पति ने किसी को भी हानि पहुँचाने की नहीं सोची । भटककर वे वहाँ पहुँचे । मेरे पति नाग के दिल में कोई खोट नहीं था । वह निरपराधी है । अनजाने में उसने दरबार में प्रवेश किया । इस छोटी सी बात के लिए राजकुमार ने उन्हें मार डाला । मेरे साथ बडा अन्याय किया गया है । उन्होंने मुझे विधवा बना दिया । इस राज्य में प्रचलित न्याय-सूत्र के अनुसार मैं राजकुमार

को मार सकती हूँ और उसकी पत्नी को विधवा बना सकती हूँ ना" बडी दीनता से उसने राजा से कहा ।

नाग की पत्नी की इन बातों से राजा बडे व्याकुल हुए । न्याय के कानून के प्रकार राजकुमार दंड के योग्य है । उसने अन्याय से नाग का वध करके उसकी पत्नी को विधवा बना डाला । किन्तु वह उनका इकलौता बेटा है । वे सोचने लगे कि भला इस विपत्ति से वे कैसे बचूँ? नागिन के साथ न्याय होना चाहिये, परंतु इसके लिए अपने पुत्र की बलि देनी होगी । एक पिता का हृदय अपने पुत्र के लिए विलपने लगा ।

कुध ना कर सकने की हालत में राजा ने फौरन तुरंत पाँच न्यायाधीशों को बुलवाया । नागिन की कही सारी बातें उन्होने सुनीं ।

बाद एक न्यायाधीश ने यों कहा "महाराज, आँख के लिए आँख, दाँत के लिए दाँत-हमारा यह न्याय-सूत्र सबको विदित है । वह बहुत समय से यहाँ अमल में है, इसलिए जिस राजकुमार के अन्याचार से नागिन विधवा हुई है, उसी वैधव्य की पीडा की सज़ा युवरानी को भी दी जा सकती है । और यह सज़ा नाग ही देने का अधिकार रखता है । अब प्रश्न तो यह है कि मरा हुआ नाग कैसे सज़ा दे पायेगा?"

नागिन ने इस फैसले को अस्वीकार करते हुए कहा "यह फैसला कोई भी न्यायशास्त्र स्वीकार नहीं करेगा । ये न्यायाधीश मुझे धोखा देने का प्रयत्न कर रहे हैं । मरा हुआ मेरा पति किस प्रकार युवरानी को विधवा
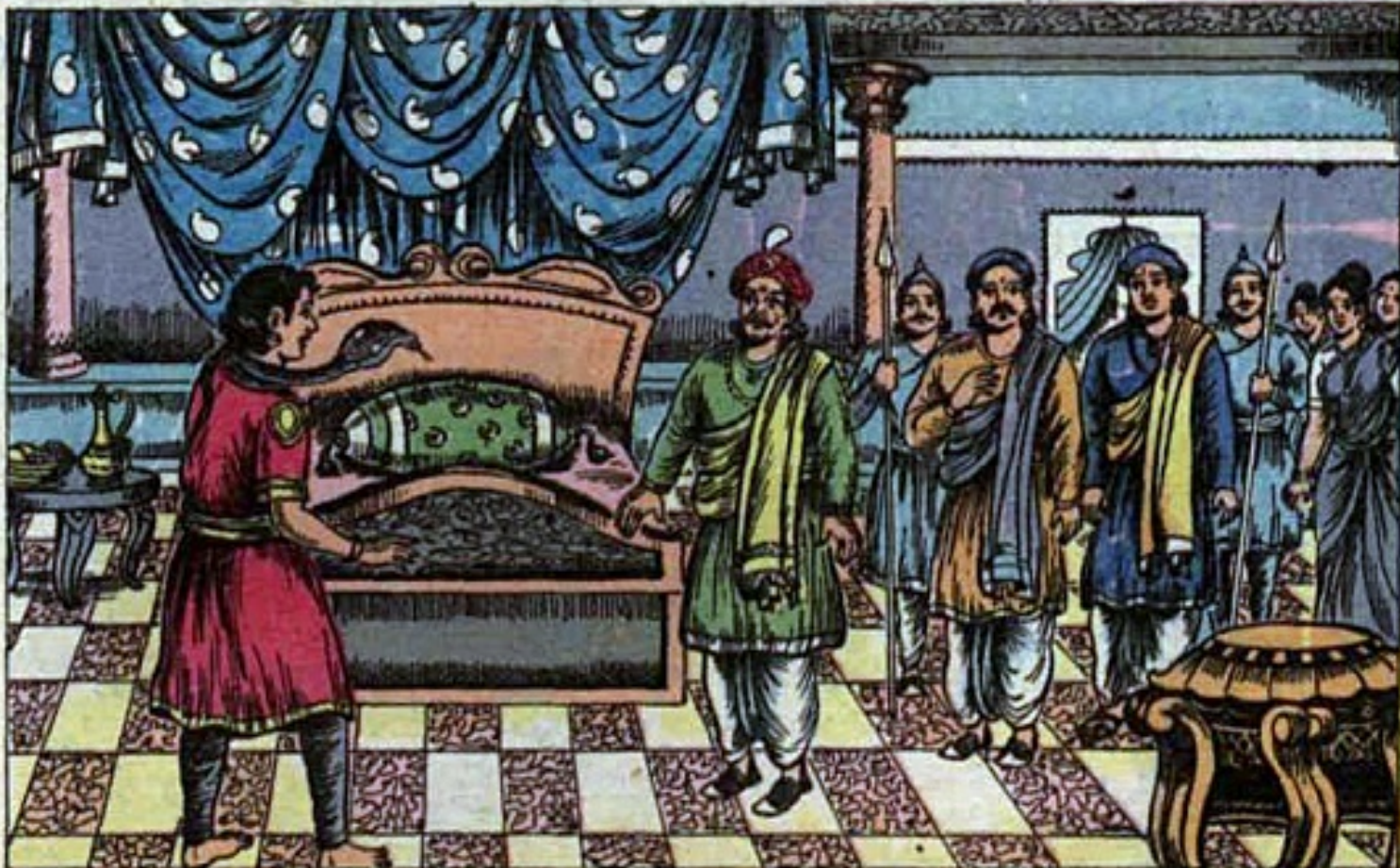
बना सकता है? न्यायाधीश अपनी वाक्-पटुता से राजकुमार को बचाने की साजिश कर रहे हैं ।"

नागिन के इस प्रश्न का उत्तर न्यायाधीश नहीं दे पाया । वह मौन रह गया ।

तब दूसरे न्यायाधीश ने कहा "नाग के कथन में सच्चाई है । परंतु यहाँ एक धर्मसंदेह हो रहा है ।" उसने नागिन से पुछा "तुम्हारी संतान कितनी है?"

नागिन ने आँखों में आँसू भरते हुए कहा "मेरे पाँच पुत्र हैं"

"बडे दुख की बात है । राजकुमार ने तुम जैसी पाँच पुत्रों की माता को विधवा बना दिया है । इसलिए तुम भी उसकी पत्नी को विधवा बना सकती हो, जब कि वह पाँच पुत्रों की माँ हो । ऐसा करने पर ही न्यायसूत्र का अमल सही रूप से होगा । है ना?" न्यायाधीश ने प्रश्न किया । संदेहावस्था में पडी नागिन ने कहा "हाँ, हाँ ।"

तब न्यायाधीश ने कहा "इसलिए तुम्हें कुछ समय तक प्रतीक्षा करनी होगी । क्योंकि युवरानी के अब दो ही पुत्र हैं । जब वह भी पाँच पुत्रों की माँ बन जायेगी, तब तुम बेरोकटोक युवराज से बदला ले सकती हो ।"

नागिन को मानना पडा कि यह फैसला उस राज्य में चालू न्यायसूत्रों के अनुरूप ही है । इसलिए उसने राजा से एक इच्छा प्रकट की कि जैसे ही युवरानी का पाँचवाँ पुत्र पैदा होगा, वैसे ही इसकी ख़बर उसे पहुँचायी जाए ।

न्यायशील राजा ने उसकी इच्छा पूरी करने का वादा किया । पर युवरानी की उसके बाद संतान ही नहीं हुई ।

जब कभी दंपति बगीचे में आते तब बडी आशा लिए नागिन बिल से अपना सिर उठाकर देखती ।

बहुत समय गुज़रने के बाद भी उनके साथ दो से ज्यादा बच्चे नहीं दिखते थे । नागिन सोचती "मैं बदला कैसे लूँगी?" बदला लिये बिना ही बेचारी नागिन मर गयी ।

पत्तों में हरियाली

हरी घास, पेडे के पत्ते, जो हरे दिखते है, उसका कारण है उनमें निहित 'क्लोरोप्लारस' और हरे पदार्थ हैं । उस 'क्लोरोप्लारस' में और चार पदार्थ हैं । 'क्लोरोफिल' नीले हरे रंग में, 'क्लोरोफिल बी' पीले, हरे रंग में 'क्लोरोफिल' पीले रंग में, 'केरोरिन' गुलावी रंग में होते हैं । घास, पत्ते उन-उन ऋतुओं के अनुरूप हरे रंग से गाढ़े हरे रंग में बदलने का कारण इन हरे पदार्थों की वजह से ही है ।

रंग बदलनेवाले गिरगिट

शत्रुओं से अपनी रक्षा करने के लिए प्रकृति ने जीवराशियों को कुछ सहूलियतों प्रदान की है । आसपास को मद्देनज़र रखकर जानवरों में अपने रंग बदलने की शक्ति उनमें मुख्य है । ऐसी शक्ति रखनेवाले जानवरों में गिरगिट प्रधान जानवर है । इनकी खाल में 'क्रोमेटोफोर्स' नामक विशिष्ट कण हैं, जो रंगों को बदलते हैं । सामान्यतया वे एक ही रंग में छोटे नक्षत्रों के रूप में होते हैं । गिरगट में ये कण विविध रंगों में होते हैं । एक रंग का कण जब दूसरे रंग के कण से मिश्रित होता है, तब एक नये रंग का जन्म होता है । उदाहरण के लिए नील और पीला रंग मिलकर हरा रंग बनता है । लाल और पीला रंग का मिश्रण होने पर गुलाबी रंग बनता है । लाल और नील मिलने पर बैंगनी रंग में परिवर्तित होता है ।

सिंदूर वर्ण के बगुले

कौओं की तरह एक ही रंग के शरीरवाले पक्षी भी बहुत ही कम होते हैं । ऐसे पक्षियों में सिंदूर वर्ण के बगुले प्रधान हैं, जो ट्रिनिडाड में पाये जाते हैं । ये विलक्षण जाति के बहुत ही सुंदर पक्षी हैं । छह हजार करोड साल पहले के इनके *शिलाजल* उपलब्ध हुए हैं । मानव जाति के इतिहास की रचना के लिए भगवान ने इनकी सृष्टि की है, ऐसा प्राचीन ईजिप्ट के लोगों का विश्वास है । अब भी वे इन पक्षियों का बडा आदर करते हैं । वे जब जन्म लेते हैं, तब बैंगनी रंग में होते हैं । फिर राख के रंग में, सफेदी में, गुलाबी रंग में परिवर्तित होते हैं । आखिर जब ये बढकर बड़े होते हैं, तब सिंदूर रंग को अपनाते हैं ।

Vacation time is here again
Time to put text books away
So we've come together to say
Have fun and 'Happy Holidays'!

It's holiday time again!
Time to put those text books
away. Time for cricket. And
ice-creams. And milkshakes.
Time for fun the whole day thru'!
From Coon, Wobbit, Teddy and all the rest
of us here at Chandamama, have a great time.
We wish we could spend your holidays with you.
THE

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार १००)

पुरस्कृत परिचयोक्तियां अगस्त, १९९३ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी ।

M. Natarajan

M. Natarajan

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों । ★ १० जून'९३ तक परिचयोक्तियां प्राप्त होनी चाहिए । ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) रु. १००-/ का पुरस्कार दिया जाएगा । ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें : **चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६.**

अप्रैल १९९३, की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **जान आयेगी तो डरायेगी!**

दूसरा फोटो : **हाथ छोडोगी तो भागेगी!!**

प्रेषक : सी. कल्याणी, 7/18, Kasturba nagar, Ist Main Road, Adyar, Madras-600 020

पुरस्कार की राशि रु. १००/- इस महीने के अंत में भेजी जाएगी ।

चन्दामामा

भारत में वार्षिक चन्दा : रु. ४८/-

चन्दा भेजने का पता :

डाल्टन एजन्सीज़, चन्दामामा बिल्डिंग्ज़, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६.

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

"चमचम निब और जादू सरपट,
कॅम्लिन कर दे मेरा होमवर्क झटपट."

छोटा पाशा का जादू - कॅम्लिन
फाउण्टेन पेन. इसकी बेहतरीन
निब से लिखाई हो बढ़िया और कितनी
जल्दी भी! तभी तो छोटा पाशा का
होमवर्क खत्म हो जाए चुटकी बजाते.
और खेलने को मिले ढेर सारा वक्त.

तुम्हारा सच्चा साथी.

Contract.CL.922.93.Hn

CHANDAMAMA (Hindi) June 1993 Regd. No. M. 5452